राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

बॉबी देओल ने कुणाल कोहली...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

सोमवार, 19 दिसंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 359 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

पूर्वोत्तर में विपक्ष पर बरसे पीएम मोदी

कहा ईमानदार सरकार ने बाधाओं को हटाकर विकास किया

शिलॉन्ग। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18 दिसंबर को मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग में उत्तर पूर्वी परिषद की बैठक में हिस्सा ले रहे है। इस दौरान उन्होंने कई विकास कार्यों का उद्घाटन किया है। उन्होंने इस दौरान जनता को भी संबोधित किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व की सरकारों पर जमकर निशाना साधा है। इस दौरान उन्होंने 2450 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया है।

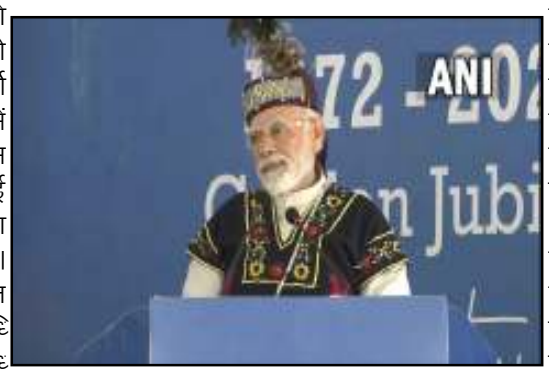

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व की सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि हम भ्रष्टाचार, पक्षपात, भाई–भतीजावाद, हिंसा, परियोजनाओं को ठप करने और वोट बैंक की राजनीति को दूर करने के लिए ईमानदार प्रयास कर रहे हैं, लेकिन इन बीमारियों की जड़ें काफी गहरी होती हैं। इसलिए, हम सभी को मिलकर इसे जड़ से उखाड़ना होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जब फुटबॉल का बुखार सभी पर चढ़ा हुआ है तो फुटबॉल की भाषा में ही बात करने चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई खिलाड़ी भावना के खिलाफ ताजा है तो उसे लाल कार्ड दिखाया जाता है। बाहर भेजा जाता है। ऐसे में अगर बीते आठ वर्षों के दौरान हमने पूर्वोत्तर के विकास में कई बाधाओं को दिखाया रेड कार्ड दिखाया है। उन्होंने कहा कि अब डंके की चोट पर बॉर्डर पर निर्माण हो रहा है। केंद्र सरकार ने नॉर्थ ईस्ट की हवाई कनेक्टिविटी को बढ़ाया है।

फीफा का भी किया जिक्र

पीएम मोदी ने इस दौरान फीफा विश्व कप का जिक्र करते हुए कहा कि आज इस खेल में कई विदेशी टीमें खेलती दिख रही है। हमारे देश के युवा भी इस खेल में आगे बढ़ते हुए इस खेल में तिरंगा लहराएंगे। उन्होने कहा कि जब हमने केंद्र सरकार की प्राथमिकताएं बदली हैं। उसका सकारात्मक असर पूरे देश भर में देखने को मिल रहा है। इस साल केंद्र सरकार ने इंफ्रास्ट्रक्चर पर सात लाख करोड़ रुपये खर्च किए है। आठ साल पहले ये राशि दो लाख करोड़ रुपये से भी काफी कम थी। आजादी के बाद सात दशकों तक इलाके के विकास के लिए मात्र दो लाख करोड़ रुपये दिए गए।

समुद्र में बढ़ी नौसेना की ताकत

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नौसेना को सौंपा आईएनएस मोरमुगाओ

नई दिल्ली। आधुनिक हथियारों से लैस स्वदेशी मिसाइल विध्वंस INS मोरमुगाओ को देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भारतीय नौसेना को सौंपा है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मुंबई के आधुनिक सेंसर और रडार से लैस युद्धपोत इंडियन नेवी को सौंपा है। इस विध्वंसक युद्धपोत की मदद से भारतीय नौसेना अब हिंद महासागर में अपनी बैठ को मजबूत कर सकता है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्छै मोरमुगाओ भारत में बने सबसे शक्तिशाली युद्धपोतों में से एक है, यह भारतीय समुद्री क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि करेगा। प्छै मोरमुगाओ दुनिया के सबसे तकनीकी रूप से उन्नत मिसाइल वाहकों में से एक है। आईएनएस मोरमुगाओ की प्रणालियां न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य की जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम होंगी। यह हमारी स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता का भी एक उदाहरण है। भविष्य में हम दुनिया के लिए जहाज निर्माण करेंगे। बता दें कि जिस तरह चीन हिंद महासागर में अपनी गतिविधियों को बढ़ा रहा है उस समय इस युद्धपोत का नौसेना में शामिल होना काफी अहम कदम माना जा रहा है। इस खास मौके पर नौसेना के प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने कहा कि यह उपलब्धि पिछले दशक में युद्धपोत डिजाइन और निर्माण क्षमता में हमारे द्वारा उठाए गए बड़े कदमों का संकेत है। नौसेना में शहरों के नाम पर जहाजों के नाम रखने की परंपरा है जो दोनों के बीच एक स्थायी कड़ी बनाती है। उन्होंने आगे कहा कि स्वदेशी युद्धपोत निर्माण के इतिहास में आज का दिन एक और मील का पत्थर है क्योंकि हमने विध्वंसक मोरमुगाओ को चालू किया है। खासियत है कि एक साल पहले विशाखापत्तनम को पहले ही भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।

ये है युद्धपोत की खासियत

INS मोरमुगाओ की लंबाई 163 मीटर, चौड़ाई 17 मीटर और 7500 टन का विस्थापन है। इसकी रफ्तार 48 किलोमीटर प्रतिघंटा की है। इसके नौसेना में शामिल होने से नौसेना की ताकत में तीन गुणा का इजाफा हुआ है। बता दें कि मोरमुगाओ पर ब्रह्मोस, बराक 8 जैसी आठ मिसाइलें लग सकती है। इसकी खासियत है कि ये हवा में मौजूद लक्ष्य को कई किलोमीटर दूर से भी पहचान सकता है। इस खासियत के कारण ये सटीक निशाना लगा सकता है। मोरमुगाओ मध्यम दूरी से हवा में वार करने वाली ˆ।ड मिसाइल, ˆ ै मिसाइल (जो सतह से सतह पर वार करती है), पनडुब्बी रोधी रॉकेट लॉन्चर, टॉरपीडो ट्यूब और लॉन्चर, सुपर रैपिड गन माउंट, कॉम्बैट मैनेजमेंट सिस्टम, इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म मैनेजमेंट सिस्टम लगे हैं. ऑटोमेटेड पावर मैनेजमेंट सिस्टम, फोल्डेबल हैंगर डोर्स, हेलो ट्रैवर्सिंग सिस्टम, क्लोज–इन वेपन सिस्टम और बो माउंटेड सोनार से लैस है। बता दें कि इस युद्धपोत को भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजायन किया गया है। इसका निर्माण मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने किया है। इस युद्धपोत का नाम पश्चिमी तट पर गोवा के ऐतिहासिक बंदरगाह शहर के नाम पर रखा गया है। इसे पहली बार पिछले साल 19 दिसंबर को समुद्र में उतारा गया था, जब गोवा में पुर्तगाली शासन से मुक्ति पाने के 60 वर्ष पूरे हुए थे।

बाहुबली मुख्तार अंसारी के सगे संबंधियों की आठ करोड़ की संपत्ति लखनऊ में कुर्क

गाजीपुर। माफिया से नेता बने मऊ के पूर्व विधायक मुख्तार अंसारी के परिवार के सदस्यों और करीबी सहयोगियों की आठ करोड़ रुपये की संपत्ति लखनऊ में उत्तर प्रदेश गिरोहबंद अधिनियम के प्रावधानों के तहत कुर्क की गयी है। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक (एसपी) ओमवीर सिंह ने पत्रकारों को बताया, ''मुख्तार अंसारी की मां राबिया खातून और अंसारी के करीबी सहयोगी तथा गिरोह के सदस्य एजाजुल अंसारी की पत्नी के नाम से लखनऊ के डालीबाग इलाके में खरीदे गये भूखंडों को कुर्क किया गया है।'' उन्होंने बताया कि यह कार्रवाई मोहम्घ्मदाबाद के पुलिस क्षेत्राधिकारी एसबी सिंह के नेतृत्व में लखनऊ गई पुलिस टीम ने लखनऊ पुलिस आयुक्घ्तालय की स्घ्थानीय टीम की मदद से की।

उपराष्ट्रपति धनखड़ आईआईटी–खड़गपुर के दीक्षांत समारोह में होंगे शामिल

कोलकाता। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर के 68वें दीक्षांत समारोह में 24 दिसंबर को बतौर विशेष अतिथि शिरकत करेंगे। संस्थान की एक प्रवक्ता ने रविवार को बताया कि आईआईटी–खड़गपुर के शासी मंडल के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिंह भी इस मौके पर मौजूद रहेंगे। उन्होंने बताया, "आईआईटी खड़गपुर इस साल प्रोफेसर बृज के ढिंडाव को 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्रदान करेगा। उन्होंने 1966 से 2009 तक धातुकर्म और सामग्री इंजीनियरिंग विभाग (सामग्री विज्ञान केंद्र) में शिक्षण और अनुसंधान संकाय में सेवा दी थी।" ढिंडाव ने एमबीबीएस कर चुके विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में 'मास्टर' कार्यक्रम शुरू करने में अहम भूमिका निभाई थी। वह वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और शिक्षा मंत्रालय समेत विभिन्न संगठनों में अहम परियोजना के लिए काम कर चुके हैं।

हिमाचल प्रदेशः 75 फीसदी से अधिक कॉलेज में नहीं है प्रधानाध्यापक, मामला अदालत में लंबित

शिमला। हिमाचल प्रदेश में 75 प्रतिशत से अधिक सरकारी कॉलेज में नियमित प्रधानाध्यापक नहीं है। प्रदेश कॉलेज शिक्षक संघ के महासचिव आर एल शर्मा ने यह जानकारी दी है। शर्मा ने कहा कि राज्य में 156 सरकारी कॉलेज में से 119 में नियमित प्रधानाचार्य के पद रिक्त हैं जबकि 75 कॉलेज की अपनी खुद की इमारत नहीं है। उन्होंने कहा कि शिमला में उच्चतर शिक्षा निदेशालय में विशेष कार्य अधिकारी (ओएसडी) के तौर पर नामित प्रधानाध्यापकों के दो पद भी खाली पड़े हैं। जब उच्चतर शिक्षा निदेशक अमरजीत शर्मा से संपर्क किया गया तो उन्होंने कहा कि प्रधानाध्यापकों के 25 पदों पर नियुक्तियां हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा की जाएगी। उन्होंने कहा, ''हमें मालूम है कि ज्यादातर कॉलेज में नियमित प्रधानाध्यापक नहीं हैं। विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) के लिए सभी दस्तावेज तैयार हैं लेकिन अदालत में एक मामला लंबित है और हम डीपीसी के साथ मिलकर प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अदालत के आदेशों का इंतजार कर रहे हैं।'' भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पूर्ववर्ती सरकार की आलोचना करते हुए शर्मा ने कहा, ''यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य सरकार और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, संकाय सदस्यों की आवश्यकता और बुनियादी ढांचे की सुविधाओं के मूल मुद्दों पर विचार किए बिना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के बारे में बात कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत बहुआयामी शिक्षा प्रणाली लागू करने के लिए महाविद्यालयों में कम से कम 3,000 और शिक्षकों की आवश्यकता होगी। कॉलेज शिक्षकों ने कहा कि राज्य में मार्च 2022 तक 132 कॉलेज थे और सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) बढ़ाने के मकसद से पिछले आठ महीने में 24 नए कॉलेज खोले गए। जीईआर राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मुख्य विशेषताओं में से एक है और इसे 2035 तक 26.3 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य है।

दिग्विजय ने पूछा, चीन से क्यों डरते हैं प्रधानमंत्री मोदी

सागर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चीन से युद्ध के खतरे वाले बयान के बाद उपजे विवाद के बीच कांग्रेस के राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने शनिवार को सवाल किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चीन की सरकार और उसकी सेना से डरते क्यों हैं। शुक्रवार को अपनी ''भारत जोड़ो यात्रा'' से इतर प्रेस को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने दावा किया था कि चीन युद्ध की तैयारी कर रहा है जबकि भारत सरकार सो रही है और खतरे को नजरअंदाज करने की कोशिश कर रही है। राहुल के इस बयान के बाद कांग्रेस और भाजपा के नेताओं की बीच जुबानी जंग छिड़ गयी है। सिंह ने सवाल किया, ''नरेंद्र मोदी चीन की सेना और सरकार से डरते क्यों हैं? जब मोदी विपक्ष में थे तो वह तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सलाह देते थे कि वे चीन को लाल आंखें (जुझारुपन) दिखाएं। वे लाल आंखें कहां हैं?'' सिंह दोनों देशों के बीच सीमा पर हाल के घटनाक्रम पर संवाददाताओं के सवालों का जवाब दे रहे थे। सिंह ने दावा किया कि जब चीनी सेना ने भारत की भूमि में ''घुसपैठ'' की थी तो तत्कालीन प्रमुख रक्षा अध्यक्ष ने इसे स्वीकार किया था लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इससे इनकार किया। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने दावा किया कि भारत में चीनी आयात दोगुना हो गया है जबकि भारत का निर्यात गिर गया है। सिंह ने आगे आरोप लगाया कि मोदी सरकार की नीतियां चीन को मजबूत करते हुए देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रही हैं। मध्य प्रदेश के मुद्दों पर बोलते हुए सिंह ने आरोप लगाया कि शिवराज सिंह चौहान सरकार कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर फर्जी मामले दर्ज कर रही है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उन्होंने बीना, खुरई और सुरखी का दौरा किया और उन कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिले, जिन्हें कथित तौर पर झूठे मामलों में फंसाया गया है और प्रशासन द्वारा परेशान किया जा रहा है।

जयराम रमेश ने कहा यात्रा ने भाजपा को कांग्रेस की बनाई पिच पर खेलने के लिए मजबूर किया

दौसा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने रविवार को कहा कि 'भारत जोड़ो यात्रा' के जरिये उनकी पार्टी ने राजनीतिक विमर्श को नयी दिशा दी है और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को अपनी बनाई पिच पर खेलने के लिए मजबूर कर रही है। यात्रा के 100 दिन पूरे होने पर 'पीटीआई–भाषा' को दिए साक्षात्कार में रमेश ने यह भी कहा कि राहुल गांधी कांग्रेस के वैचारिक आधार को धार देने की कोशिश कर रहे हैं और पार्टी के निर्वाचित अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के साथ 'जुगलबंदी' में काम कर रहे हैं। यह पूछने पर कि क्या पार्टी अगले साल ऐसी एक और यात्रा निकाल सकती है, रमेश ने कहा, ''मैं पोरबंदर (गुजरात) से परशुराम कुंड (अरुणाचल प्रदेश) तक यात्रा में निश्चित तौर पर हिस्सा लेना पसंद करूंगा, लेकिन क्या हम अगले साल यात्रा निकाल सकते हैं और हम ऐसा कैसे सकते हैं, इस पर पार्टी के उचित मंचों पर चर्चा की जानी है।'' कांग्रेस महासचिव (संचार) रमेश ने कहा कि 'भारत जोड़ो यात्रा' के जरिये राहुल गांधी ने राजनीतिक विमर्श को नयी दिशा दी है और कांग्रेस ने पिछले 100 दिन की दिशा तय कर दी है। रमेश ने कहा, ''कांग्रेस की सराहना, आलोचना, प्रशंसा और निंदा की गई। इसका क्या मतलब है कि हम बचाव की मुद्रा में थे।

अब झारखंड में हुआ श्रद्धा वॉल्कर हत्याकांड जैसा मामला, पति ने पत्नी को मारकर शव को इलेक्ट्रिक कटर से काटा

नई दिल्ली। दिल्ली के श्रद्धा वॉल्कर हत्याकांड को अभी भूला भी नहीं पाए थे कि अब झारखंड में ऐसे ही मामले ने दहला दिया है। झारखंड के साहिबगंज में 22 वर्षीय रूबिका पहाड़िया मर्डर मामला सामने आने के बाद से ही लोग हैरान और अचंभित है। यहां आदिवासी लड़की रूबिका की हत्या उसके ही पति दिलदार अंसारी ने की है, जिसे जानने के बाद रोंगटे खड़े हो गए है। शुरुआती जांच में पता चला है कि रूबिका की हत्या दिलदार अंसारी ने ही की है। देर रात पुलिस को सूचना मिली कि एक शादीशुदा महिला की लाश कई टुकड़ों में पड़ी हुई मिली है। ये महिला बोरियो थाना क्षेत्र की रहना वाली थी। महिला की शादी दिलदार अंसारी नाम के युवक के साथ हुई थी। दोनों ने दो साल लिव इन में रहने के बाद 10 दिन पहले ही शादी की थी। पुलिस ने महिला की हत्या के आरोप में पति को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस ने कई अन्य लोगों को भी पूछताछ में शामिल किया है। जानकारी के मुताबिक साहिबगंज में श्रद्धा हत्याकांड जैसी वारदात हुई है। इस घटना की जानकारी मिलने के बाद एसपी अनुरंजन किस्पोट्टा अपनी टीम के साथ घटना स्थल पहुंचे। जांच में पता चला है कि लड़की की हत्या करने के बाद सबूत मिटाने के उद्देश्य से शव के टुकड़े किए गए थे। शव के टुड़े इलेक्ट्रॉनिक कटर से हुए थे। शव के टुकडों को ढूंढने के लिए खोजी कुत्तों की मदद ली गई थी। माना जा रहा है कि आरोपी ने शव के 50 टुकड़े कर उन्हें फेंका था। पुलिस ने शव के हिस्सों की जांच करने के लिए डॉक्टर्स की टीम को बुलाया है। इसके अलावा फॉरेंसिक लैब में भी टुकड़ों को जांच के लिए भेजा गया है। वहीं हत्या की घटना के सामने आने के बाद पुलिस ने खोज बीन में शव के 12 टुकड़े बरामद किए है। मगर अभी मृतका के सिर समेत कुछ अन्य हिस्से ढूंढना बाकी है।

राम पथ चौड़ीकरण मुवावजे में लेखपाल पर लगा क्षतिपूर्ति हड़पने का आरोप

भू स्वामी ने एसडीएम से की लेखपाल की शिकायत लगाया न्याय की गुहार

अयोध्या । रामनगरी में राम पथ के चौड़ीकरण की जद में आने वाले दुकानों व मकानों के मालिकों के साथ राजस्व विभाग के लेखपाल और तहसीलदार उन्हें मिलने वाले मुआबजे में बड़ा खेल करने में जुटे है। जिसका खुलासा एक भूस्वामी द्वारा एसडीएम सदर को दी गयी शिकायत के बाद हुआ है। जिसमे शिकायत कर्ताओं ने संबंधित लेखपाल पर क्षतिपूर्ति का कागजात तो 17 लाख का बनाया गया लेकिन मुआबजा 2 लाख रुपए देने की बात की जा रही है। जिसको लेकर जमीन के मालिकों ने वरिष्ठ अधिकारियों का दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया है।

शिकायतकर्ता का आरोप है कि लेखपाल सर्वा सिंह ने उनसे मात्र 5 लाख मुआवजा बनने की बात कहते हुए 1 लाख स्वयं लेने और 2 लाख मकान वालो को और 2 लाख भू स्वामी को नकद देने की बात कहते हुए हुए उनसे सरकारी सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने का दबाब बनाया है। ऐसा न करने पर किसी और से हस्ताक्षर करवाने कर कागजी कोरम पूरा करने की भी धमकी दी है। जबकि भू स्वामी द्वारा पता करने पर जो जानकारी हुई वह काफी चौकने वाली है। जिसमे उस भूमि पर 17–17 लाख दो जगह मुआवजा तय किया गया है। शिकायत कर्ताओं का कहना है कि लेखपाल सर्वा सिंह मकान स्वामियों ताहिरा बेगम समरा बनो, मो0 इस्तियाक,मो0 मुस्ताक,रियाज अहमद,मो इरशाद, के साथ सांठगांठ करके उसके स्वामित्व वाली भूमि गाटा संख्या 111 मि0 क्षेत्रफल 1 बीघा 5 विस्वानसी में अधिग्रहित भूमि की क्षतिपूर्ति 35 लाख रुपये हड़प लेने के फिराक में है जोकि एक अपराध है। शिकायत कर्ता रामजी शुक्ला ने एसडीएम से उक्त प्रकरण में धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज करवाकर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग की है। जब इस बारे में आरोपी लेखपाल से बात करने के लिए उनके मोबाइल पर सम्पर्क किया गया तो वह एनेबल कांटेक्ट रहे।

स्वतंत्रता सेनानी वंशजों को किया गया सम्मानित

-काकोरी बलिदान दिवस पर शहीद अशफाक उल्ला खां के शहादत स्थल पर हुआ आयोजन

अयोध्या । आजादी का अमृत महोत्सव अन्तर्गत काकोरी बलिदानियों की स्मृति में देश की आजादी में अपना योगदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों का सम्मान कमिश्नर अयोध्या मण्डल गौरव दयाल ने किया। इस अवसर पर सम्मानित होने वालों में स्व.बाबू सर्व जीत लाल वर्मा के वंशज रणजीत लाल वर्मा,स्व. बाबू नारायण दास खत्री के वंशज पूर्व सांसद निर्मल खत्री,स्व. रमानाथ मेहरोत्रा के वंशज मनोज मेहरोत्रा,स्व. मन्नीलाल शुक्ला के वंशज रामकुमार शुक्ला, स्व.महावीर प्रसाद गुप्त बिगुलर के वंशज केशव बिगुलर, स्व. डा. सुरेन्द्र अग्रहरि के वंशज शिव मोहन, स्व.महबूब हुसैन खान के वंशज आलिया जुबेरी पू. सांसद, स्व. सीताराम सिंहके वंशज राजा पालसिंह, स्व. राजा राम मिश्र के वंशज विनीत मिश्र,का नाम प्रमुख रहा ।

सेनानी वंशजों को माला, पुष्प गुच्छ, अंगवस्त्र, श्रीराम जी की मूर्ति, सम्मान पत्र, संस्कृति विभाग का विशेषांक, मिष्ठान व अन्यानेक सम्मान से विभूषित करने का काम ए. डी. एम. सिटी सलिल कुमार पटेल, सिटी मजिस्ट्रेट,जेल अधीक्षक डा. शशिकांत मिश्र, डिप्टी जेलर शुमरा अंसारी, प्रशासनिक अधिकारी संस्कृति विभाग राम तीरथ,राम कथा संग्रहालय उप निदेशक योगेश कुमार के सहयोग से अयोध्या मण्डल आयुक्त गौरव दयाल ने किया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे संस्कृति विभाग उद्घोषक विश्व प्रकाश "रूपन" की बहुत ही सुनियंतरित संचालन हेतु आयुक्त गौरव दयाल ने सराहना कर शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता,फैशन शो, प्रतियोगिता के विजेताओं का भी सम्मान किया गया । 15 से 19 दिसंबर तक काकोरी बलिदानियों के सम्मान में चलने वाले कार्यक्रम में जनपद वासियों को भी जेल स्थिति फांसी घर परिसर में आने व कार्यक्रमों , प्रदर्शनी आदि का आनंद लेने व शहीदों को नमन करने हेतु भी स्थानीय प्रशासन ने अनुरोध किया है।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ की मौत

सोहावल–अयोध्या । रौनाही थाना क्षेत्र के मकसूमगंज गंज बाजार के पास एक अधेड़ की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। जिसका शव सुबह सड़क के किनारे पाया गया है।सूचना पर पहुँची रौनाही पुलिस ने लाश को को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्यवाही करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार सोहावल तहसील क्षेत्र के खिरौनी के मजरे भुलई का पुरवा निवासी बुधिराम पुत्र छुल्लुर जो कबाड़ी का काम करता है स कल घर से निकला और वापस नही आया।जिसकी लाश आज संदिग्ध परिस्थितियों में थाना क्षेत्र के मकसूमगंज के पास पाई गई।जानकारी मिली है उक्त अधेड़ नशे का आदी था।लाश मिलने की सूचना पर पहुँची रौनाही पुलिस ने लाश को कब्जे में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।पूछे जाने पर वरिष्ठ उप निरीक्षक सोहेल खान ने बताया कि लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है । मामले की छानबीन की जा रही है।

सीआरओ चकबंदी ने फरियादियों की सुनी समस्याएं

–समाधान दिवस में आए 140 मामले, तीन का हुआ निस्तारण

मिल्कीपुर–अयोध्या । मिल्कीपुर तहसील परिसर में आज समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य राजस्व अधिकारी चंद्रशेखर मिश्रा ने फरियादियों की समस्याओं को सुना और कुछ समस्याओं का तत्काल निस्तारण भी संबंधित विभाग के कर्मचारियों से कराया। वहीं एसडीएम अमित जायसवाल ने बताया कि समाधान दिवस में आने वाले फरियादियों को समस्याओं का समाधान जल्द से जल्द कराया जाएगा कभी भी किसी भी फरियादी को निराशा नहीं होगी। . मिल्कीपुर तहसील परिसर में समाधान दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें तहसील क्षेत्र के 140 लोग शिकायतें लेकर पहुंचे। जिसमें से 3 समस्याओं का तहसीलदार ने मौके पर निस्तारण किया व शेष बची समस्याओं का जल्द समाधान करने की बात कही। हैरिंग्टनगंज विकासखंड सागर पट्टी गांव निवासिनी निर्मला ने शिकायती प्रार्थना पत्र दिया है कि मेरे नाम अंतोदय राशन कार्ड है मैं अपने बेटे तिलकराम व बहू मामता का नाम राशन कार्ड में बढ़ाने के लिए प्रार्थना पत्र दिया। लेकिन आज तक नहीं बढ़ाया गया पूर्ति निरीक्षक मुहीद खान ने बताया कि जांच कराकर नाम को बढ़ाया जाएगा।

थाना कुमारगंज के जोरियम गांव निवासिनी राजरानी ने समाधान दिवस में प्रार्थना पत्र देते हुए आरोप लगाया है कि मेरे गांव के सिद्धार्थ सिंह पुत्र पवन सिंह उमा सिंह पत्नी पवन सिंह मेरी बेशकीमती जमीन को हड़पना चाह रहे हैं जब मैं इसकी शिकायत पुलिस से करती हूं तो पुलिस हमको फर्जी मुकदमे में जेल भेज देने के लिए भी कहती है ।चौकी प्रभारी उक्त लोगों से मिले हुए हैं। साहब लाल जयसवाल निवासी देवरिया बारून बाजार ने समाधान दिवस में प्रार्थना पत्र दिया है। मुख्य राजस्व अधिकारी ने 2–8– 2022 तथा 25–11– 2022 को एंटी भू माफिया की कार्यवाही सचिन , सुनील ,प्रभावती व अमन के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए एसडीएम को आदेश किया था। लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। शिकायतकर्ता साहब लाल से एसडीएम ने जल्द कार्यवाही करने का आश्वासन दिया है। थाना कोतवाली इनायत नगर क्षेत्र के कहुआ गांव निवासी शिव बहादुर दुबे ने शिकायती प्रार्थना पत्र देते हुए समाधान दिवस में अब तक मैंने 40 शिकायती प्रार्थना पत्र दे चुका हूं लेकिन एक पर भी शिकायती पत्र की सुनवाई नहीं हुई, उन्होंने यह भी बताया कि तहसील प्रशासन की मिलीभगत से बेशकीमती 200 एयर बंजर भूमि पर एक ही परिवार के लोगों ने कब्जा किया है। न्यायालय के आदेश पर तहसील प्रशासन ने 42 एयर पर बेदखली की कार्यवाही की है ।शेष भूमि पर आज भी अतिक्रमण बरकरार है। मुख्य राजस्व अधिकारी ने कहा कि अतिक्रमण को जल्द खाली कराया जाएगा। इस मौके पर सभी विभाग के जनप्रतिनिधि अधिकारी मौजूद रहे।

हाईकोर्ट के आदेश पर अवैध मकानों पर चला बुलडोजर

मिल्कीपुर, अयोध्या । मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम अहरन सुवंश में हाईकोर्ट के आदेश पर सरकारी रिजर्व जमीन पर अतिक्रमण कर बनाये गए अवैध मकान को तहसील प्रशासन ने बुलडोजर चलवाकर ध्वस्त कर दिया। मिल्कीपुर तहसीलदार हेमन्त गुप्ता ने बताया कि मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत अहरन सुवंश में खेल के मैदान के लिए सुरक्षित जमीन पर गांव के ही त्रिभुवन व रामभवन ने अतिक्रमण करके अवैध निर्माण कर लिया था। जिस पर अहरन सुवंश निवासी महावीर ने उच्च न्यायालय में याचिका की थी। जिसमें कोर्ट ने मिल्कीपुर एसडीएम को अतिक्रमण हटाने का आदेश दिया था। तहसीलदार ने बताया कि अहरन सुवंश के महावीर ने हाईकोर्ट याचिका दायर की थी। जिसमें सोमवार को जिलाधिकारी नितीश कुमार को तलब किया गया है। उसी क्रम में तहसीलदार हेमन्त गुप्ता व इनायतनगर एसएचओ अमरजीत सिंह मय पुलिस फोर्स के द्वारा अहरन सुवंश के खेल मैदान पर किए गए अतिक्रमण को धराशाई किया गया।

बैंक कर्मी महिला के साथ 5 लाख की धोखाधड़ी मुकदमा दर्ज पुलिस निष्क्रिय

बलरामपुर। उत्तर प्रदेश योगी सरकार जहां एक तरफ अपराधा को जीरो टारलेंस पर पहुंचाने के लिए बेचौन है तो वहीं दूसरी तरफ अपराधी है कि अपने आदतों से बाज नहीं आते हैं तथा सरकार व जनता को चूना लगाते रहते हैं बताते चलें कि एक तरफ बैंक कर्मी महिला को उसके साथी हरीश कुमार श्रीवास्तव द्वारा उक्त महिला को जमीन दिलाने के नाम पर वर्ष 2017 में बैंक कर्मी को प्लाट दिलाने की एवज में एक के बाद एक करके लगभग तीन चार किस्तों में लगभग 550000 का चूना लगा दिया। महिला ने बताया कि उक्त पैसे उसने वर्ष 2017 में एक एक करके तीन किस्तों में भुगतान कर दिया इसके बाद हरीश कुमार श्रीवास्तव जो बलरामपुर के मोहल्ला पूरब टोला का रहने वाला है प्लाट देने के लिए बराबर झांसा देता रहा। अंत में मजबूर होकर प्रार्थिनी को हरीश कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव मोहल्ला पूरब टोला के खिलाफ आईपीसी की धारा 419 420 406 354 506 के अंतर्गत मुकदमा पंजीकृत कराना पड़ा। मुकदमा पंजीकृत होने के बाद अभी तक आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर है बताते चलें कि उक्त आरोपी के खिलाफ जनपद लखनऊ के थाना जानकीपुरम में बृजेश कुमार चौधरी द्वारा भी एक मुकदमा विभिन्न अपराधिक धाराओं में जिस में मुख्य रुप से आईपीसी की धारा 147 420 406 323 504 506 ब–ज पंजीकृत है मामले की विवेचना संबंधित थाने की पुलिस कर रही है जिसमें वांछित अभियुक्त पुलिस की पकड़ से बाहर है

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ हुआ समापन

एमएलके महाविद्यालय के भौतिक विभाग में शनिवार से शुरू हुई थी संगोष्ठी

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। एम एल के पी जी कॉलेज बलरामपुर सभागार में भौतिकी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन रविवार को हुआ। संगोष्ठी में वक्ताओं ने रीसेंट एडवांसेज इन मल्टीफंक्शनल मटेरियल्स विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। रविवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्रोफेसर सुग्रीव नाथ त्रिपाठी ने की । उन्होंने समारोह में उपस्थित विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्रोफेसर व शोध छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि बहुआयामी पदार्थों की ग्रहणशीलता का उपयोग करके दैनिक जीवन में आ रही बीमारियों को आसानी से जाना जा सकता है। साथ ही यदि समय रहते ही बीमारियों के कारणों की जानकारी हो जाती है तो इससे बचाव भी किया जा सकता है। महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर जे पी पाण्डेय ने दो दिनों तक चलने वाले संगोष्ठी में बाहर से आये हुए अतिथियों ,प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सभी लोग 21 वीं शताब्दी के प्रगति पर हैं । हमने बहुआयामी पदार्थों को काफी हद तक जाना और उपयोग भी किया है।अभी भी बहुत संभावनाएं है कि हम सभी बहुआयामी पदार्थों का उपयोग करके आने वाली पीढ़ी को और बेहतर बना सकते हैं। इस दौरान प्राचार्य,मुख्य नियंता प्रो0 पी के सिंह व संयोजक प्रो0 अरविंद द्विवेदी ने कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो0 सुग्रीव नाथ त्रिपाठी को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। सेमिनार के निष्कर्ष की रूपरेखा कमलेश कुमार चौरसिया ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव डॉ आलोक शुक्ल ने किया। इसके पूर्व टेक्निकल सत्र में बीएचयू के प्रोफेसर अंचल श्रीवास्तव व संजय श्रीवास्तव, डॉ भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के वी थापा व सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के प्रो0 देवेश कुमार आदि ने सेमिनार के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। इस बीच महाविद्यालय के पूर्व शोध छात्र फरहान पाशा ने आस्ट्रेलिया से ऑनलाइन पेपर प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एलबीएस डिग्री कॉलेज गोण्डा के प्राचार्य प्रो0 आर के पाण्डेय,प्रो0 तबस्सुम फरखी,प्रो0 एस पी मिश्र,प्रो0 वीणा सिंह सहित देश के विभिन्न प्रान्तों से आये डेलीगेट्स व महाविद्यालय के शिक्षक व शोध छात्र मौजूद रहे।

सोहावल तहसील मे आयी 103 शिकायते, 8 का हुआ निस्तारण

सोहावल–अयोध्या । तहसील परिसर में उप–जिलाधिकारी मनोज कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में तहसील समाधान दिवस में कुल 103 शिकायतें आयी। ब्लाक स्तर राजस्व पुलिस से संबधित आठ शिकायतों का तत्काल निस्तारण किया गया। इस मौके पर तहसीलदार पवन कुमार गुप्ता सहायक खण्ड विकास अधिकारी मसौधा बद्री प्रसाद वर्मा सीएससी प्रभारीप्रभारी सोहावल डा 0 प्रदीप कुमार सहित राजस्व एवं थाना प्रभारी संतोष कुमार ने सहभागिता निभाने हुए फरियादियों की जन समस्याओं को सुना। उप–जिलाधिकारी सोहावल ने संबधित विभाग के कर्मियों को मौके पर जाकर समय अवधि में निस्तारण करने का निर्देश दिया है।

रात्रि कालीन अलाव जलाने की मांग

अयोध्या । रात्रि के समय पड़ रही कड़ाके की ठंड को देखते हुए जिला कांग्रेस प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने महानगर क्षेत्र में रात्रि कालीन अलाव जलाने की मांग प्रशासन से की है श्री गौतम ने कहां रात्रि में ठंड से गरीब मजदूर यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा पर अभी तक प्रशासन को अलाव जलाने की सुध नहीं हुई जिससे आम जनता को भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा। उन्होंने कहा पूरा प्रशासन अयोध्या उजाड़ने में ही व्यस्त है उसे आम आदमी के समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है लगभग सभी वार्डों में सड़कें खुदी पड़ी है और निर्माण अत्यंत धीमी गति से चल रहा है। श्री गौतम ने नगर निगम प्रशासन से प्रत्येक वार्ड की समस्याओं को दूर करने और अलावा को जलाने की यथाशीघ्र व्यवस्था करने की मांग की।

प्राथमिक विद्यालय बढ़ईपुरवा में बाल संसद गठन का आयोजन किया गया

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। प्राथमिक विद्यालय बढ़ईपुरवा में बाल संसद गठन का आयोजन किया गया।गठन को पूरे चुनावी प्रक्रिया से कराया गया, जिसमें बच्चों द्वारा प्रचार प्रसार करते हुए चुनाव के माहौल को तैयार किया गया। तत्पश्चात बच्चो ने प्रधानमंत्री पद के लिए नामांकन किया,नामांकन के पश्चात कुछ ने नाम वापसी भी लिया,चुनाव अधिकारी द्वारा उम्मीदवारों को चुनाव चिन्ह दिए गये, फिर बच्चों ने पूरे मनोयोग से प्रचार किया।चुनाव को सफल बनाने के लिए बच्चों को ही पुलिसकर्मी,पीठासीन अधिकारी,सेक्टर मजिस्ट्रेट आदि की जिम्मेदारी दी गयी,जिसका निर्वाहन बच्चों ने बखूबी से निभाया। बाल संसद गठन के आयोजन में आमंत्रित किये गये ए०आर०पी० श्री वेदमणि त्रिपाठी जी ,श्री विवेकानंद अवस्थी जी,श्री सत्यप्रकाश पाठक जी एवं वरिष्ठ संकुल शिक्षक श्री चन्द्रेश मिश्र के सानिध्य में हुआ एवं गठन की रूप रेखा तैयार किया गया पिरामल फाउंडेशन की सुश्री प्रिया कमातकर एवं श्री नितेश प्रताप सिंह द्वारा,जिसमे भरसक सहयोग प्रदान किया गया प्राथमिक विद्यालय बढ़ईपुरवा के समस्त स्टाफ श्री हर्षित सिंह,श्रीमती अजिता शर्मा,सुश्री अनीता ओझा,श्री हरी राम एवं श्री भीष्म कुमार मिश्र जी के द्वारा।साथ मे एस. एम.सी सदस्यों एवं वालिंटियर आसमा का भी सहयोग प्राप्त हुआ। चुनाव प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद परिणाम की घोषणा किया गया जिसमें ओम प्रकाश कक्षा 4 का छात्र विजयी हुआ। जिसे प्रधानमंत्री पद से नवाजा गया। दूसरे स्थान पर रहीं पूजा गुप्ता जिन्हें उप प्रधानमंत्री पद से नवाजा गया।गठन समिति द्वारा अन्य बच्चों को भी अलग–अलग पद से नवाजा गया। 'गठन की पूरी टीम' '1–प्रधानमंत्री–ओम प्रकाश '2–उप प्रधानमंत्री–पूजा गुप्ता 3–शिक्षा मंत्री–पलक गिरी 4–उप शिक्षा मंत्री–संतोष निषाद 5–अनुशासन मंत्री–साहिल खान 6–पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री–सुमित वर्मा 7–खेल एवं सांस्कृतिक मंत्री–शिवा मिश्र 8–स्वास्थ्य एवं स्वक्षता मंत्री–अमित कुमार'

न्यायालय श्रीमान सिविल जज जू0डि0/F.T.C(I)
जनपद–सि0 नगर

अनीता देवी बनाम राजतिलक,अन्य
फौ0 वाद सं0–266/2022

आप के खिलाफ न्यायालय सिविल जज जू0डि0 /F.T.C(I) में फौ0 वाद सं0–266/2022 विचाराधीन है जिसमें मा0 न्यायालय द्वारा आप के दिये गये पते पर लगातार रजि0 डाक द्वारा पैरवी/सम्मन भेजा गया लेकिन तामील नही किया जा रहा है।

अतः आप को अन्तिम अवसर देते हुये दिनांक – 04.01.2023 को उपस्थित होने का आदेश दिया जा रहा है उपस्थित होकर अपना पक्ष रखे,अन्तिम समय/अवसर बीत जाने पर न्यायालय अपना निर्णय कर देगा।

हा0
न्यायालय सिविल जज
जू0डि0/F.T.C(I)

दिनांक–19.12.2022

सर्वसाधारण सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मकान का पुराना बैनामा जिसका डीड क्रमांक 1428,372 है कहीं गायब हो गया जिसकी सूचना थाना शोहरतगढ़ पर दिया है।

गंगोत्री देवी पत्नी विजयकुमार
निवासी– कोटिया बाजार,
जनपद–सि0नगर,उ0प्र0।

रामलला के नाम से बनेगा ऐतिहासिक भजन : अनूप चौधरी

अयोध्या । भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं रेल मंत्रालय, भारतीय खाद्य निगम खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण उपभोक्ता मंत्रालय भारत सरकार सलाहकार समिति के सदस्य अनूप चौधरी पहुँचे अयोध्या धाम किया भगवान श्री राम लला जी का दर्शन पूजन। श्री चौधरी ने मीडिया को बताया की भगवान श्री राम लला जी के ऊपर बहुत जल्द बनेगा ऐतिहासिक भजन जिसका निर्माण करेंगे साउथ फिल्म जगत के विख्यात कलाकार पद्मश्री व पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित व राज्य सभा सांसद इल्लया राजा जी। सांसद इल्लया राजा जनवरी में अयोध्या आकर करेंगे रामलला दर्शन पूजन लेगें संतो का आशीर्वाद। अनूप चौधरी अयोध्या अपने निजी दौरे पर आकर भगवान रामलला का दर्शन कर पुजारी सतेंद्र दास का आशीर्वाद लेने पहुंचे थे उनके मंदिर। पुजारी सतेंद्र दास के साथ श्री चौधरी पत्रकारों से मुखातिब होकर बताया कि भगवान रामलला के मंदिर के पूरे इतिहास पर सुंदर भजन बनायेंगे साथ भगवान राम के अन्य 6 भजन और बनायेंगे। इस मौके पर रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य महंत दिनेंद्र दास पुजारी प्रदीप आदि लोग मौजूद रहें।

वोट नहीं आशीर्वाद मांग रही संजू सिंह

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर में भाजपा के संभावित प्रत्याशी संजू सिंह रविवार को नगर पालिका क्षेत्र में घूम घूम कर लोगों से आशीर्वाद मांगती नजर आयी। संजू सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर महिलाओं से वोट नहीं आशीर्वाद की मांग रखते हुए सभी से लगातार समर्थन पाती नजर आ रही हैं आपको बता दें कि नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर के निकाय चुनाव में पूर्व ब्लाक प्रमुख संजू सिंह पत्नी राजू सिंह लगातार अपने क्षेत्रों में जाकर लोगों से जनसंपर्क अभियान छेड़े हुए हैं लगातार जाने के नाते जहां नगरपालिका के विस्तारित क्षेत्रों में सबसे ज्यादा बढ़त संजू सिंह बनाती जा रही है तो वहीं लोगों के बीच बीच में वोट नहीं आशीर्वाद का नारा भी काफी चर्चा में बना हुआ है ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं से बात करने पर पता चलता है कि संजू सिंह मानो उनकी जुबान पर चढ़ी हुई हैं और हर घर से उन्हें जनसमर्थन रूपी आशीर्वाद मिलता नजर आ रहा है रविवार को संजू सिंह ने नगरपालिका के विस्तारित क्षेत्र परसा महापात्र,थरौली,मुड़िला,बसडिलिया,मधुकरपुर ,महनगा आदि क्षेत्रों में आशीर्वाद मांगती नजर आयी उनके साथ सैकड़ों समर्थक भी मौजूद रहे।

उसका में बाला जी भजन कीर्तन में झूमे श्रद्धालु

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर। कस्बा के स्टेट बैंक के सामने गांधी चबूतरा मैदान में रविवार को बाला जी सरकार का भजन कीर्तन व विशाल भंडारे का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कर्णप्रिय भजन सुनकर श्रद्धालु झूम उठे। भजन गायक प्रमोद चंचल ने गुरुदेव दया करके अपना बना लेना , भक्तों के संकट को बाला जी सरकार हरते है , आदि कर्णप्रिय भजन को सुनकर श्रद्धालुओं खूब आनन्दित हुए। भजन गायक शनि सावरिया ने दुनिया न चले श्रीराम के बिना, श्रीराम न चले हनुमान के बिना, बाला जी सरकार सबका कष्ट हरते है ,आदि भजन सुनाए। इसीतरह बाला जी सरकार के दरबार मे भजन गायिका पूजा दूबे ने भी भजन कीर्तन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सहयोग कन्हैया सोनी ने बताया कि पिछले पाँच वर्षों से यह आयोजन चल रहा है। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण व भंडारे के साथ हुआ। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन हेमन्त कुमार जायसवाल, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि सुरेश यादव, राहुल दूबे, मनोज सिंगर, राजू अग्रहरि,रवि प्रकाश पाण्डेय, गयादीन गुप्ता, अमरेश वर्मा, आशीष जायसवाल, महेंद्र, घनश्याम, सूरज मोदनवाल, चंदन, हरिकांत पाण्डेय, अमर जायसवाल, सोमनाथ मिश्र, मनोज जायसवाल, बलराम जायसवाल, विभूति अग्रहरि , वीरेंद्र पाण्डेय, प्रमोद पाण्डेय आदि रहे।

प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापकों को पदस्थापन एवं नियुक्ति पत्र का वितरण

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। मिशन रोजगार के अन्तर्गत मा0 मुख्यमंत्री उ0प्र0 योगी आदित्यनाथ द्वारा लोक भवन लखनऊ से वर्चुवल रूप से निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के अन्तर्गत उ0प्र0 लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित प्रदेश के 1395 प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापकों को पदस्थापन एवं नियुक्ति पत्र का वितरण किया गया।इस कार्यक्रम के अवसर पर मुख्यमंत्री द्वारा उ0प्र0 लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापको को बधाई दिया गया। मुख्यमंत्री जी ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा विभिन्न बोर्डों द्वारा होने वाली भर्ती प्रक्रिया में जातिवाद, भ्रष्टाचार को खत्म करते हुये निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से चयन की कार्यवाही की जा रही है। राज्य सरकार द्वारा विगत पांच से साढ़े पांच वर्षों में 5 लाख से अधिक युवाओं को प्रदेश के अन्दर सरकारी नौकरी देने में सफलता प्राप्त की है। प्रदेश के अन्दर 7 लाख से अधिक उद्यमियों को स्वतः रोजगार के माध्यम से जोड़ने का कार्य किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर मा0 प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत सरकार के अधीन विभिन्न विभागों में 10 लाख से अधिक नौकरीध्रोजगार से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश के अन्दर बेहतरीन कानून व्यवस्था से सुरक्षा, दंगामुक्त प्रदेश बनाने का वातावरण दिया गया। जिससे महिलाए सुरक्षित, सशक्त एवं भयमुक्त होकर कार्य कर सकें। मा0 मुख्यमंत्री जी ने चयनित प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापको को संदेश दिया कि आप सभी अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का पूरे मनोयोग से निर्वहन करें जिससे अच्छे समाज का निर्माण हो और हमारा प्रदेश उत्तम प्रदेश बने। एनआईसी सिद्धार्थनगर में विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही, विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा, प्रभारी जिलाधिकारीध्मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार द्वारा जनपद सिद्धार्थनगर से प्रवक्ता पद पर चयनित राजन, इमामुददीन, राम केश, पवन कुमार, शिवेन्द्र प्रताप चौधरी, नवीन सोनी, अजय कुमार श्रीवास्तव, देवेश कुमार चतुर्वेदी एवं सहायक अध्यापक पद पर चयनित शिव कुमार, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी, हकीमुल्लाह, विपलव कुमार को पदस्थापन एवं नियुक्ति पत्र प्रदान किया और बधाई दिया गया।

ब्लाक प्रमुख ने सुधारी जोगमाया मार्ग की हालत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जोगिया उदयपुर चौराहे से मेन मार्ग होते हुए जोगमाया मंदिर की तरफ जाने वाली सड़क जो ब्लॉक के सामने काफी दिनों से क्षतिग्रस्त थी जिससे आने जाने वाले राहगीर भी बार–बार चोटिल हो रहे थे आखिरकार युवा भाजपा नेता एवं ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि श्रीष चौधरी के प्रयासों से पुनः अच्छी सड़क के रूप में तब्दील हो गया। आपको बता दें कि ब्लॉक के सामने काफी दिनों से सड़क पूरी तरीके से क्षतिग्रस्त थी जहां बारिश के दिनों में हमेशा पानी भी लग जाया करता था जिस पर किसी भी जनप्रतिनिधि का ध्यान नहीं जा रहा था लेकिन जोगिया ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि श्रीष चौधरी के नजर में आते ही तत्काल उन्होंने मरम्मत कराते हुए सड़क को सही सलामत कर दिया जिससे आने जाने वाले सभी राहगीर एंव जनता ने आशीष एंव आशीर्वाद देते नजर आ रहे हैं आपको बता दें कि युवा भाजपा नेता ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि श्रीष चौधरी इस समय के अच्छे नेता के रूप में उभरते नजर आ रहे हैं पर आए दिन जनता की समस्याओं का समाधान कराने में सबसे आगे नजर आ रहे हैं।

अपराधों पर रोक–थाम हेतु थाना शिवनगर डिंडई में प्रधानों के साथ बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी। बढती ठंढ व शीतलहर के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आंनद के आदेश के क्रम में थानाध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ला द्वारा थाने पर बुलाई गई बैठक में थाना क्षेत्र के अधिकांश प्रधानों ने सहभाग किया।रविवार को थाने पर आहूत बैठक में उपस्थित लोगों को थानाध्यक्ष श्री शुक्ला ने उच्चाधिकारियों से प्राप्त आदेशोंधनिर्देशों से अवगत कराया! सुरक्षा के दृष्टिगत गावों में सुरक्षा समितियों के गठन पर बल देते हुए उन्होंने गावों के प्रमुख रास्तों पर सीसीटीवी कैमरा लगवाने का सुझाव दिया! उन्होंने काफी दिनों से गांव में रह–रहे अपरिचित व्यक्ति के क्रिया–कलापों पर ध्यान देने की बात कही।उन्होंने यह भी कहा कि गांवों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए गांवों में होने वाले छोटे विवादों को नजरअंदाज न करें, क्योंकि छोटे विवाद ही बडी घटनाओं का कारण बनते हैं। बैठक में अपराध एवं अपराधियों के संबंध में सूचनाओं के आदान–प्रदान की बात भी कही गई! बताया गया कि गांव में किसी भी असामान्य घटना व संदेहास्पद बात की जानकारी बिलम्ब किए बगैर हल्का प्रभारी व बीपीओ को तथा साथ ही थानाध्यक्ष को अवगत कराएं! बैठक में अखिलेश चौधरी ,अनिल कुमार चौधरी, इलमास अहमद, मनोज, राम सागर,अरुण प्रताप सिंह ,राममिलन चौधरी, जितेंद्र चौधरी , धर्मराज , अब्दुल लतीफ, सायरा बानों, अब्दुल रहीम, धर्मेन्द्र कुमार, मो0 युसुफ,डा0 रियाज अहमद, हरिश्चन्द्र उपाध्याय, प्रदीप, ताहिर आदि प्रधान सहित धर्मेंद्र कुमार प्रजापति राजकिशोर यादव, कपिल मुनि राय, कां0 सुशील कुमार,कां0 अनीश कुमार, कां0 विपिन कुमार, कां राहुल कुमार, म0कां0 शिप्रा सिंह, म0कां0 पारुल आदि भी मौजूद रहे।

5 वर्षों से भुगतान न होने पर शिक्षक भूखमरी के कगार पर, सरकार बनी अनजान

मदरसा आधुनिकिकरण शिक्षकों ने 4 सूत्री मांग पत्र का ज्ञापन सासद को सौंपा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर । मददरसा आधुनिकिकरण शिक्षक संघ जिला इकाई ने रविवार को अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री भारत सरकार स्मृति इरानी को सम्बोधित चार सूत्री मांग पत्र स्थानीय् सांसद जगदम्बिका पाल को देकर मददरसा आधुनिकिकरण शिक्षको को बकाया 5 वर्ष का मानदेय केंद्रांश के भुगतान की मांग की है । साथ ही विगत कई वर्षों से मानदेय की। वृद्धि नही हुई है । महगाई के नुसार मानदेय कि विृद्धि के अलवा प्री मैट्रिक छात्र वृति को बहाल करने कि मांग की।संघ के जिला इकाइ के अध्यक्ष अतिउल्लाह खान के नेतृरतव मे प्रतिनिधि मंडल ने चार सूत्री मांग को लेकर अल्प संख्यक कल्याण मंत्री से मांग करते हुए कहा कि वर्तमना वित्तीय वर्ष मे योजना का नवीनीकरण नही किया गया है । उन्होंने तत्काल नवीनी करण किये जाने की मांग किया है । वर्ष 2021–22 एवं 2022–2023 का बकाया मानदेय के भुगतान की मांग किया है।संघ के जिला मीडिया प्रभारी जाकिर खान ने मांग पत्र सौपते समय कहा आज संपूर्ण भारत वर्ष मे अल्पसंख्यक दिवस के रूप मे मनाने का सरकार के द्वारा फर्जी फरमान जारी करके अल्प संख्यक को ठगने का नापक चाल चल रही है । जो सरासर गलत है । जो छलावा मात्र है । एक तरफ अल्पसंख्यक के अधिकार पर आरा चल रहा है । दुसरी तरफ दिवस पर अल्पसंख्यक विभाग से समस्त मदरसों के जिम्मेदारों को अधिकार दिवस मनाने का फर्जी फरमान जारी क्या मतलब । जो सबके सबके सामने है । कार्यकर्म कर अल्पसंख्यक को मुर्ख्बनाने का कैसा मजाक । जब अधिकार ही नही , तो अल्प् संख्यक अधिकार दिवस कैसायही नही अल्प संख्यक से जुड़े लगभग एक दर्जन योजनाये है ।लेकिन धरातल पर एक भी नही सब आकाश और पाताल मे हैं । उन्होंने आगे कहा की ऐसे दिवस का संघ बहिष्कार करता हैं । गूगी और बहरी सरकार के रवाइये से पूरा संघ पीड़ित है। संघ इस दिवस को निंदा करती है ।उन्होंने कहा की अल्प संख्यक के प्रीमैट्रिक छात्र वृत्ती योजना , फैलोशिफ योजना , दशमोत्तर छात्र वृत्ती योजना ,मेरिटकम छात्र , मदरसा पोषण अनुदान योजना , प्रवेश शुल्क प्रतिपूर्ती योजना , मदरसा वोकेशल योजना , पूर्वरती मल्ती सेकतोर्ल्योजना सहित धरातल पर नही बालकी आसमान पर हैं ।इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष अतिउल्लाह खान , उपाध्यक्ष सरफराज अहमद , मीडिया प्रभारी जाकिर खान , शिक्षक अवरार अहमद , सेराज आलम खान , अकबाल् अहमद प्रथम , श्यामसुंदर गुप्ता , अब्दुल रज्जाक तनवीर हुसैन , गुलहसन , श्मशाद अहमद ,आश्रफ अली , यार मोहम्द् , डाक्टर फखरूद्दीन खान , जाकिर हुसैन , मो रफी , सईद् आलम , अंजुम आरा , निहाल सहित , अकबाल् अहमद द्वितीय सहित आदि शिक्षकों की मौजूदगी रही ।

कम्पोजिट विद्यालय के बच्चे गये लुम्बनी शैक्षिक भ्रमण

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर। रविवार को सुबह करीब 8 बजे कम्पोजिट विद्यालय बिजवार बढई भनवापुर के बच्चे शैक्षिक भ्रमण के लिए लुम्बनी गए। प्रधानाध्यापक रामप्रकाश मिश्रा ने बताया कि शैक्षिक भ्रमण एक पहल है। हम लोग बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए इस भ्रमण का आयोजन किए हैं। इस भ्रमण में कुल 63 बच्चे शामिल हुए हैं, बच्चों को नेपाल के लुम्बिनी प्रांत के रुपन्देही जिले में एक बौद्ध तीर्थ स्थल है। यह वह स्थान है जहां भगवान बुद्ध की जन्म स्थली है 623 बीसी में लुंबिनी के प्रसिद्ध बागों में हुआ था, जो जल्द ही तीर्थयात्रा का स्थान बन गया। तीर्थयात्रियों में से भारतीय सम्राट अशोक थे, जिन्होंने वहां अशोक स्तंभ स्मारक बनाया था। खंभे पर शिलालेख नेपाल में सबसे पुराना है।इतिहास प्रेमियों और बौद्धों के लिए लुम्बिनी एक महत्वपूर्ण जगह है । हम चाहते हैं कि बच्चे वहां जाकर हर विषय को बेहतर तरीके से जानें। इस दौरान रामप्रकाश मिश्रा,अजय कुमार पाण्डेय, उदित कुमार पाल,अजय दूबे, शिवकुमार,नन्दनी मिश्रा (अनुचर) सुरेश आदि लोग मौजूद रहे।

सम्पादकीय

भाजपा की राज्यवार बैठकें भी शुरू

2014 की 73 सीटों के मुकाबले भाजपा और उसकी सहयोगी अपना दल को 64 सीटें मिलीं यानी नौ सीटों का नुकसान हुआ। इस बार भाजपा की योजना सीटें बढ़ाने की है। कश्शी कश्शरिडोर और अयोध्या में राममंदिर निर्माण के बाद भाजपा उम्मीद कर रही है कि वह फिर से 73 या उससे भी ज्यादा पहुंच सकती है। बसपा के रुख को देखते...

भारतीय जनता पार्टी ने अगले साल के विधानसभा और उसके अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों की तैयारी गंभीरता के साथ शुरू कर दी है। पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों और प्रभारियों के साथ बैठक के बाद राज्यवार बैठकें भी शुरू हो गई हैं। राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ पार्टी के बड़े नेताओं की बैठक पांच और छह दिसंबर को हुई थी। पांच दिसंबर को गुजरात में दूसरे चरण के मतदान के दिन सुबह में वोट डाल कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दोनों दिल्ली आ गए थे और पार्टी पदाधिकारियों की बैठक में शामिल हुए थे। उसमें प्रधानमंत्री मोदी ने पार्टी के नेताओं से कहा था कि वे जी–20 की अध्यक्षता भारत को मिलने का मुद्दा जनता के बीच ले जाएं और उन्हें गर्व का अहसास कराएं। अब पार्टी ने राज्यवार बैठकें शुरू कर दी है। पहली बैठक उत्तर प्रदेश की हुई है। उत्तर प्रदेश के दोनों बड़े नेताओं– राजनाथ सिंह और योगी आदित्यनाथ की बैठक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ हुई। बताया जा रहा है कि इसमें पार्टी के संगठन में होने वाले बदलाव और अगले चुनावों के बारे में चर्चा की गई। हालांकि पार्टी के राष्ट्रीय संगठन और राज्यों में होने वाले बदलाव पर विचार के लिए बैठक में योगी आदित्यनाथ को बुलाने का मतलब नहीं बनता है। उत्तर प्रदेश में संगठन का बदलाव नहीं होना है। वहां हाल ही में भूपेंद्र चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है और नए संगठन महामंत्री गए हैं। अगर दूसरे राज्यों के संगठन में होने वाले बदलाव पर विचार के लिए योगी को बुलाया गया तो यह कई लिहाज से बड़ी बात होगी। बहरहाल, पार्टी की ओर से आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहा गया है लेकिन ऐसा लग रहा है कि उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों को लेकर यह बैठक हुई है। इसमें और भी मुद्दे उठे होंगे लेकिन बुनियादी रूप से राज्य में लोकसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर चर्चा हुई होगी। ध्यान रहे पिछली बार समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी मिल कर चुनाव लड़े थे तब भाजपा की सीटें घट गई हैं। 2014 की 73 सीटों के मुकाबले भाजपा और उसकी सहयोगी अपना दल को 64 सीटें मिलीं यानी नौ सीटों का नुकसान हुआ। इस बार भाजपा की योजना सीटें बढ़ाने की है। कॉशी कॉरिडोर और अयोध्या में राममंदिर निर्माण के बाद भाजपा उम्मीद कर रही है कि वह फिर से 73 या उससे भी ज्यादा पहुंच सकती है। बसपा के रुख को देखते हुए भी पार्टी सीटें बढने की उम्मीद कर रही है। ध्यान रहे योगी मुख्यमंत्री हैं और राजनाथ मुख्यमंत्री रहे हैं, जबकि अमित शाह और जेपी नड्डा दोनों उत्तर प्रदेश के प्रभारी रह चुके हैं। इसलिए इन चार नेताओं का मिलना और चुनाव तैयारियों पर चर्चा करना अहम है। अब देखना है कि इस तरह की चर्चा और किन राज्यों को लेकर होती है।

सीमा को ले कर देश को भरोसे में लें

अरुणाचल प्रदेश पर चीन की नजर है। रक्षा विशेषज्ञों ने कहा है कि अभी जो हुआ है, वह ग्रे–जोन ऑपरेशन है। लेकिन आगे बात और बिगड़ सकती है। चीन का अधिक आक्रामक रुख देखने को मिल सकता है। खबरों के मुताबिक अरुणाचल प्रदेश के तवांग क्षेत्र में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हिंसक झड़प नौ दिसंबर को हुई। 12 दिसंबर को उसकी खबर सूत्रों के हवाले से आई। क्या यह हैरतअंगेज नहीं है कि तीन दिन तक दोनों देशों की सरकारें ऐसी भड़काऊ घटना को लेकर चुप्पी साधे रहीं? हैरतअंगेज हाल यह भी है कि भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा के साथ–साथ कूटनीतिक मोर्चे भी तनाव जारी होने के बावजूद कारोबार के क्षेत्र में संबंध लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। ऐसे में एक आम भारतीय के लिए यह समझना कठिन हो गया है कि दोनों देशों के बीच रिश्तों की वास्तविक स्थिति क्या है। जून 2020 में गलवान में दोनों देशों के सैनिकों के बीच झड़प होने के बाद भारत सरकार की तरफ से आए कुछ बयानों ने भ्रम और बढ़ा दिया था। मसलन, प्रधानमंत्री ने कहा था कि भारतीय क्षेत्र में कोई घुसपैठ नहीं हुई है। उधर केंद्रीय मंत्री और पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वीके सिंह ने तो यहां तक कह दिया था कि चीन के फौजियों ने जितनी बार घुसपैठ की है, उससे कई गुना ज्यादा बार भारतीय सैनिकों ने ऐसा किया है। इस बीच देश के अंदर राष्ट्रवादी भावनाओं का उफान जरूर आया, लेकिन जहां चीन को सचमुच जवाब देने की जरूरत थी, वहां कुछ हुआ– ऐसी जानकारी सार्वजनिक रूप से मौजूद नहीं है। अब जबकि अरुणाचल प्रदेश से लगी चीन की सीमा पर भी हालात बिगडने के संकेत हैं, तो यह उचित अपेक्षा है कि भारत सरकार इस बारे में देश को भरोसे में ले। इसकी शुरुआत सर्वदलीय बैठक से की जा सकती है, लेकिन जरूरी यह भी है कि आम जन को भी वास्तविक स्थिति के बारे में मालूम हो। ऐसी चर्चाएं रही हैं कि अरुणाचल प्रदेश पर चीन की नजर है। रक्षा विशेषज्ञों ने कहा है कि अभी जो हुआ है, वह ग्रे–जोन ऑपरेशन है। लेकिन आगे जा कर बात और बिगड़ सकती है और चीन का अधिक आक्रामक रुख देखने को मिल सकता है। इसलिए ऐसी तमाम अवांछित स्थितियों के लिए देश को तैयार रहना होगा। सरकार इसकी शुरुआत लोगों को असल हालत से जागरूक करते हुए कर सकती है।

आइकॉनिक साड़ी

वस्त्र इतिहासकार रता कपूर चिश्ती ने युवा पीढ़ी को साड़ी पहनने के प्रति आकर्षित करने के लिए साड़ी को 108 तरीकों से लपेटने की कला में महारत हासिल की है, जिससे यह गाउन, स्कर्ट या पलाजो की तरह दिखाई देती है। पारंपरिक परिधान से फैशनेबल पोशाक तक की साड़ी की यात्रा भारतीय वस्त्रकारों द्वारा निर्मित अनेक साडियों के साथ देखी जा सकती है, जिन्होंने कपड़े, मूल्य–वर्धन, ड्रेपिंग की शैली ...

प्रो. रूबी कश्यप सूद

साड़ी, सिलाई रहित और लपेटकर पहना जाने वाला एक विशिष्ट परिधान है, जो हर भारतीय महिला की अलमारी में निश्चित तौर पर विशेष स्थान रखता है। यह प्राचीन काल से ही धारण किए जाने वाला एक ऐसा पुरातन परिधान है, जो खुद को आधुनिक भारत में महिलाओं की प्राथमिकताओं और जीवन शैलियों में आ रहे बदलावों के अनुकूल कुशलता से ढालकर अपना चलन बरकरार रखे हुए है। साड़ी किसी महिला के जीवन के विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उसे पहनने वाली महिला की उसके साथ अलग–अलग तरह की भावनाएं जुड़ी होती हैं। शहरी भारत में, साड़ी किशोरावस्था से वयस्कता की दहलीज पर कदम रखने का प्रतीक है, जब एक वयस्क युवती अपने स्कूल के विदाई समारोह में साड़ी पहनने को तत्पर होती है। साड़ी किसी दुल्हन के साजो–सामान का महत्वपूर्ण भाग होती है, और संतान के जन्म के अवसर पर भी उपहार में दी जाती है। हाथ से बनी शानदार साडियों को उनसे जुड़ी यादों और भावनात्मक लगाव के कारण विरासत के रूप में सहेज कर रखा जाता है, जो दादी–नानी से लेकर मां और बेटियों तक जाती हैं। गरिमापूर्ण अंदाज से बांधी गई साड़ी को पूरे भारत में आतिथ्य, विमानन, स्वास्थ्य सेवा और अन्य उद्योगों में कार्यरत महिलाओं के विशिष्ट यूनिफॉर्म के रूप में भी पहचाना जाता है, जो विनम्रता, कुशलता और सुरुचि का संदेश देती है। भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों की प्रतीक साड़ी राजनीति के क्षेत्र से जुड़ी नेत्रियों की भी पसंदीदा पोशाक है। बहुउपयोगी साड़ी विभिन्न अवतारोंरू शक्ति और श्रेष्ठता, आकर्षक और मनोहर, सुरुचिपूर्ण एवं विनम्र, और विरासत व संस्कृति का मूर्त रूप है। श्साड़ीच्य शब्द की उत्पत्ति दक्षिण–पश्चिमी द्रविड़ शब्द श्सायरश से हुई है। साड़ी के अन्य स्वदेशी नामों में केरल में पुडवा, तमिलनाडु में सेलाई, महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में लुगडा, उत्तर प्रदेश में लुगड़ी, उड़ीसा में सारही आदि शामिल हैं। साड़ी एक आयताकार लंबाई वाला कपड़ा होता है, जिसकी लंबाई 4 से 9 गज तक और चौड़ाई लगभग एक गज होती है। अपनी सिलाई रहित गुणवत्ता के कारण साड़ी हिंदू संस्कृति द्वारा निर्धारित शुद्धता के सिद्धांतों के अनुरूप है। अनेक प्रकार के कपड़ों और टेक्स्चर में फ्लूइड साड़ी उपलब्ध है और इसे भारत के विभिन्न राज्यों से उपजी विभिन्न शैलियों में लपेटा (ड्रेप) जाता है। भारत की साडियों को क्षेत्र विशेष की विशिष्ट निर्माण तकनीक के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। पारंपरिक साडियां विविध प्रकार की होती हैं, जिनमें हाथ से बुनी हुई, कशीदाकारी, रेसिस्ट–डाई या प्रिंटेड शामिल हैं। उत्कृष्ट हथकरघा साडियों में उत्तर प्रदेश की बनारस ब्रोकेड, पश्चिम बंगाल की जामदानी, तमिलनाडु की कांजीवरम, महाराष्ट्र की पैठाणी, गुजरात की अश्वली, मध्य प्रदेश की चंदेरी और माहेश्वरी आदि शामिल हैं। कशीदाकारी वाली साडियों में उत्तर प्रदेश की चिकनकारी, पश्चिम बंगाल की कांथा और कर्नाटक की इलकल कसुती साड़ी शामिल हैं। परिष्कृत रेजिस्ट–डाइड साडियों में गुजरात से पटोला जैसे यार्न रेसिस्ट–डाई से लेकर ओडिशा से बंधा, आंध्र प्रदेश से पोचमपल्ली से लेकर राजस्थान और गुजरात से बंधनी जैसी फैब्रिक रेजिस्ट–डाइड की आकर्षक साडियां हैं। इस लपेटे या ड्रेप किए जाने वाले परिधान में आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान जैसे क्षेत्रों की विभिन्न प्रकार की ब्लॉक प्रिंटेड साडियां की व्यापक रेंज शामिल हैं। इस बात पर गौर करना दिलचस्प होगा कि पूरे भारत में क्षेत्रीय, जातीय और जनजातीय समुदायों से विभिन्न साड़ी शैलियों और उसे लपेटने या ड्रेप करने की विधियों की उत्पत्ति हुई है। आयताकार साड़ी को तीन भागों में विभाजित किया गया है, फील्ड, लंबाई के मुताबिक बॉर्डर और अंतिम सिरा, इसे विभिन्न तरीकों से लपेटे जाने पर यह टू–डायमेंशनल कपड़े को शानदार ढंग से एक व्यवस्थित परिधान में बदल देता है। एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी मानवविज्ञानी, शॉन्तेल बुलॉन्जे ने भारत में प्रचलित 100 से अधिक विभिन्न साड़ी लपेटने (ड्रेपिंग) की शैलियों को सूचीबद्ध किया है। ड्रेपिंग की कुछ लोकप्रिय शैलियों में निवी, जिसमें चुन्नट या प्लीट्स को सामने की तरफ टक किया जाता है और अंतिम सिरे या एंड–पीस को प्लीटेड कर बाएं कंधे पर लपेटकर पीछे की ओर लटकाया जाता हैय महाराष्ट्र की काच्छा शैली, जिसमें पीछे की चुन्नट के साथ फोर्क्ड ट्राउजर जैसा प्रभाव उत्पन्न होता हैय उत्तरी शैली जिसमें अंतिम सिरे या एंड–पीस को पीछे से आगे की ओर छाती को ढंकते हुए लपेटा जाता हैय और द्रविड़ शैली, जिसमें कमर के चारों ओर चुन्नट को झालर की तरह लपेटा जाता हैय शामिल हैं। वस्त्र इतिहासकार रता कपूर चिश्ती ने युवा पीढ़ी को साड़ी पहनने के प्रति आकर्षित करने के लिए साड़ी को 108 तरीकों से लपेटने की कला में महारत हासिल की है, जिससे यह गाउन, स्कर्ट या पलाजो की तरह दिखाई देती है। पारंपरिक परिधान से फैशनेबल पोशाक तक की साड़ी की यात्रा भारतीय वस्त्रकारों द्वारा निर्मित अनेक साडियों के साथ देखी जा सकती है, जिन्होंने कपड़े, मूल्य–वर्धन, ड्रेपिंग की शैली और ब्लाउज के साथ प्रयोग किए हैं। कपड़े के आयताकार टुकड़े के साथ प्रयोग करने की काफी संभावनाएं हैं और इसमें हुए प्रभावशाली बदलावों ने युवतियों में इनके प्रति रुचि पैदा की है और वह साड़ी में सहज महसूस कर रही हैं और अपनी खुद की स्टाइल स्टेटमेंट बना रही हैं। परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण–साड़ी हमेशा शाश्वत रहेगी और दुनिया के लिए एक प्रतिष्ठित भारतीय पोशाक बनी रहेगी। 'लेखिका वस्त्र डिजाइन, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली हैं

इस तरह एक ओर पर्यावरण रक्षा के सभी पक्ष एक–दूसरे की सहायता से मजबूत होंगे तथा दूसरी ओर जलवायु बदलाव जैसे धरती को संकटग्रस्त करने वाले मुद्दों को कहीं अधिक व्यापक समर्थन मिलेगा। यदि लगभग सभी देशों में ऐसे प्रयास एक साथ हों तो जलवायु बदलाव जैसे संकट के संतोषजनक समाधान की मांग विश्व स्तर पर बहुत असरदार ढंग से उभर सकेगी। तिस पर यदि ...

पर्यावरण : असरकारी आवाज उठे

भारत डोगरा

विश्व में श्डूमस्डे क्लाक्च्य अपनी तरह की प्रतीकात्मक घड़ी है जिसकी सुइयों की स्थिति के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया जाता है कि विश्व किसी बड़े संकट की संभावना के कितने नजदीक है।

इस घड़ी का संचालन श्बुलेटिन ऑफ एटोमिक साइंटिस्ट्स्च्य नामक वैज्ञानिक संस्थान द्वारा किया जाता है। इसके परामर्शदाताओं में 15 नोबल पुरस्कार विजेता भी हैं। ये सब मिलकर प्रति वर्ष तय करते हैं कि इस वर्ष घड़ी की सुइयों को कहां रखा जाए। इस घड़ी में रात के 12 बजे को धरती पर बहुत बड़े संकट का पर्याय माना गया है। घडी की सुइयां रात के 12 बजे के जितने नजदीक रखी जाएंगी, उतनी ही किसी बड़े संकट से धरती (और उसके लोग व जीव) के संकट की स्थिति मानी जाएगी। 2020–21 में इन सुइयों को (रात के) 12 बजने में 100 सेकेंड पर रखा गया। संकट के प्रतीक 12 बजे के समय से इन सुइयों की इतनी नजदीकी कभी नहीं रही। दूसरे शब्दों में, यह घड़ी दर्शा रही है कि इस समय धरती किसी बहुत बड़े संकट के सबसे अधिक नजदीक है। इस समय यह चर्चा है कि निकट भविष्य में डूमस्डे से दूरी को और कम किया जाएगा क्योंकि 2022 में पर्यावरण व युद्ध के खतरे बढ़ गए हैं। श्डूमस्डे घड़ीच्य के वार्षिर्क प्रतिवेदन में इस स्थिति के तीन कारण बताए गए हैं।

पहली वजह यह है कि जलवायु बदलाव के लिए जिम्मेदार जिन ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में 2013–17 के दौरान ठहराव आ गया था उनमें 2018 में फिर वृद्धि दर्ज की गई। जलवायु बदलाव नियंत्रित करने की संभावनाएं समग्र रूप से धूमिल हुई हैं। दूसरी वजह यह है कि परमाणु हथियार नियंत्रित करने के समझौते कमजोर हुए हैं। आईएनएफ समझौते का नवीनीकरण नहीं हो सका। तीसरी वजह यह है कि सूचना तकनीक का बहुत दुरुपयोग हो रहा है जिसका सुरक्षा पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इन तीन कारणों के मिले जुले असर से आज विश्व बहुत बड़े संकट की संभावना के अत्यधिक नजदीक आ गया है, और इस संकट को कम करने के लिए जरूरी कदम तुरंत उठाना जरूरी है।

क्या श्डूमस्डे घड़ीच्य के इस अति महत्त्वपूर्ण संदेश को विश्व नेतृत्व समय रहते समझेगा? हाल के वर्षो में यह निरंतर स्पष्ट होता रहा है कि अब तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है। जिन कारणों से हजारों वर्षो तक धरती पर बहुत विविधतापूर्ण जीवन पनप सका, वे आधार ही बुरी तरह संकटग्रस्त हो चुके हैं। धरती की जीवनदायिनी क्षमता के संकटग्रस्त होने के अनेक कारण हैं–जलवायु बदलाव व अनेक अन्य गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं, परमाणु हथियार व अन्य महाविनाशक हथियार आदि। इस बारे में तो निश्चित जानकारी मिल रही है कि धरती पर जीवन संकट में है, पर इसे दूर करने के लिए समय पर असरदार कदम कैसे उठाए जाएंगे इस बारे में अभी बहुत अनिश्चित स्थिति है। जो प्रयास हो रहे हैं, वे बहुत अपर्याप्त हैं। उससे कहीं अधिक बड़े प्रयास और बड़े बदलाव चाहिए।

यह प्रयास अमन–शांति, पर्यावरण और जीवन के सभी रूपों की रक्षा, लोकतंत्र, समता और न्याय की परिधि में होने जरूरी हैं। इस सभी मुद्दों पर विश्व के विभिन्न देशों में विभिन्न जन–आंदोलन और जन–अभियान पहले से चल रहे हैं। इनके विभिन्न आयाम हैं। उदाहरण के लिए यदि केवल अमन–शांति के आंदोलनों और हिंसा–विरोधी आंदोलनों और अभियानों की बात करें तो किसी भी देश में इनके विभिन्न आयाम हो सकते हैं। बारुदी सुरंगों या अन्य विशिष्ट छोटे हथियारों के विरुद्ध एक अभियान हो सकता है, तो परमाणु हथियारों जैसे महाविनाशक हथियारों के विरुद्ध एक अलग अभियान। पड़ोसी देशों से संबंध सुधारने के कई अभियान हो सकते हैं। महिला हिंसा, बाल–हिंसा और घरेलू हिंसा के विरुद्ध कई आंदोलन हो सकते हैं। शिक्षा संस्थानों व कार्यस्थलों पर होने वाली हिंसा के विरुद्ध अभियान हो सकते हैं। एक बड़ी चुनौती यह है कि अमन–शांति के इन सभी जन–अभियानों और आंदोलनों में आपसी एकता बना कर उन्हें बड़ी ताकत बनाया जाए जिसका असर अधिक व्यापक व मजबूत हो। ये सभी शाखाएं एक–दूसरे की पूरक हों, इनकी अमन–शांति के मुद्दों पर व्यापक व समग्र सोच हो, वे अहिंसा की सोच में गहराई तक पहुंच सकें।

जब अमन–शांति की ये सभी धाराएं परमाणु हथियारों को समाप्त करने के बारे में आम सहमति बनाएं तो इस मांग को बहुत बल मिलेगा। दूसरे शब्दों में, अपनी विशिष्ट मांगों के साथ यह सभी अभियान उन मांगों को भी अपनाएं जो धरती पर जीवन को बुरी तरह संकटग्रस्त कर रही समस्याओं के समाधान से जुड़ी हैं। इस तरह किसी भी देश में बहुत व्यापक स्तर पर धरती की रक्षा की मांग उठ सकती है। फिर सभी देशों से मांग उठेगी तो अपने आप विश्व स्तर पर यह मांग बहुत असरदार रूप से उठ पाएगी। विभिन्न देशों के अमन–शांति के आंदोलनों में आपसी समन्वय हो, एकता हो तो साथ–साथ जोर लगाकर परमाणु हथियारों को समाप्त करने की मांग को वे और भी असरदार ढंग से उठा सकेंगे। यही स्थिति पर्यावरण की रक्षा के आंदोलन की भी है। किसी भी देश में इस आंदोलन के कई अध्याय हो सकते हैं जैसे नदियों के प्रदूषण को कम करना, वायु प्रदूषण को कम करना, प्लास्टिक के प्रदूषण को कम करना आदि। यदि इन विभिन्न अभियानों और आंदोलनों का आपसी समन्वय हो तो इनकी आवाज मजबूत बनेगी। इस ओर भी विशेष ध्यान देना होगा कि जो मुद्दे धरती के जीवन को बुरी तरह संकटग्रस्त करने वाले हैं (जैसे जलवायु बदलाव का मुद्दा) उन मुद्दों को पर्यावरण रक्षा के आंदोलन अपने विशिष्ट मुद्दों के साथ–साथ जोर देकर उठाएं। इस तरह एक ओर पर्यावरण रक्षा के सभी पक्ष एक–दूसरे की सहायता से मजबूत होंगे तथा दूसरी ओर जलवायु बदलाव जैसे धरती को संकटग्रस्त करने वाले मुद्दों को कहीं अधिक व्यापक समर्थन मिलेगा।

सभी विभागाध्यक्ष शिकायतों को तय समय में निस्तारण सुनिश्चित करें: जिलाधिकारी

बिसवां नगर (सीतापुर)। जनता की शिकायतों एवं समस्याओं को स्थानीय स्तर पर त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से शासन के निर्देशानुसार तहसील बिसवां में जिलाधिकारी अनुज सिंह एवं पुलिस अधीक्षक घुले सुशील चन्द्रभान की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान उन्होंने सभी शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को एक–एक करके सुना एवं उनके प्रभावी निस्तारण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये। जिलाधिकारी अनुज सिंह ने जोर देकर कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप सभी विभागाध्यक्ष कार्यवाही करते हुये शिकायतों को तय समय में निस्तारण सुनिश्चित करें, जिससे वह डिफाल्टर न होने पाये।

उन्होंने कहा कि समस्त विभागाध्यक्ष यह सुनिश्चित कर लें कि शिकायतों का गुणवत्तापरक निस्तारण हो तथा शिकायत का निस्तारण होने पश्चात शिकायतकर्ता संतुष्ट होना चाहिए, यह सुनिश्चित किया जाये। आई0जी0आर0एस0, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन आदि माध्यमों से प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापरक निस्तारण सुनिश्चित किया जाये। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक घुले सुशील चन्द्रभान ने पुलिस विभाग से संबंधित शिकायतों को सुनकर उनके प्रभावी निस्तारण के निर्देश दिये। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी बिसवां पी0एल0 मौर्य, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 मधु गैरोला, जिला विकास अधिकारी हरिशचंद्र प्रजापति, तहसीलदार सहित संबंधित विभागों के संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। तहसील बिसवां में सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर कुल 126 शिकायतों में से 11 का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इसी प्रकार से जनपद की अन्य तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में तहसील सिधौली में प्राप्त 36 प्रार्थना पत्रों में से 04, तहसील लहरपुर में प्राप्त 74 प्रार्थना पत्रों में से 04, तहसील महोली में प्राप्त 43 प्रार्थना पत्रों में से 03, तहसील मिश्रिख में प्राप्त 41 प्रार्थना पत्रों में से 05, तहसील सदर में प्राप्त 55 प्रार्थना पत्रों में से 04, तहसील महमूदाबाद में प्राप्त 73 प्रार्थना–पत्रों में से 12 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष बची हुयी शिकायतों को पृष्ठांकित कर निर्धारित समयावधि के अन्दर संबंधित अधिकारी को निस्तारित करने के निर्देश दिये गये।

ग्राम्य विकास राज्यमंत्री ने गौशाला का किया औचक निरीक्षण

भूसे का भंडारण एवं रजिस्टर खरीद के संदर्भ मे ली जानकारी

परसेण्डी (सीतापुर)। परसेंडी विकासखंड के अंतर्गत गौशाला मदनापुर का औचक निरीक्षण विजय लक्ष्मी गौतम ग्राम्य विकास राज्यमंत्री द्वारा किया गया। रात को लगभग 600 बजे गौशाला का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ग्रामीणों से भी गौशाला मैं प्राप्त सुविधाओं के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान गौशाला में हरे चारे एवं भूसे का भंडारण भी पूछा एवं रजिस्टर मंगा कर खरीद के संदर्भ में भी जानकारी प्राप्त की। ग्राम पंचायत अधिकारी प्रियेश गोहोई को जमकर फटकार लगाई तथा मनरेगा से निर्मित टीन सेट को भी देखा। गौशाला में काऊ कोट उपलब्ध नहीं मिले एवं खंड विकास अधिकारी काजल रावत ने मंत्री को बताया कि जो भी सुविधाएं गौशाला में अवशेष हैं वह भी कार्य योजना बनाकर जल्द पूरी की जाएंगे। अंत में ग्राम प्रधान शान मोहम्मद ने मंत्री को बताया गौशाला तक मार्ग सही ना होने के कारण आने जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसलिए मनरेगा से सड़क मार्ग निर्माण कराने की मांग की एवं गौशाला के बगल में 3 बीघे जमीन जिस पर ग्रामीणों के द्वारा अवैध रूप से गन्ना बोया है। अतिक्रमण हटाकर नेपियर घास लगवाने की मांग की मंत्री के द्वारा मौके पर ही मुख्य विकास अधिकारी अक्षत वर्मा को बुलाकर मनरेगा से मार्ग को शीघ्र निर्माण कराने का दिशा निर्देश दिया। अतिक्रमण मुक्त कर जमीन को नेपियर घास लगवाने का आदेश भी दिया। विजय लक्ष्मी गौतम के द्वारा औचक निरीक्षण करने से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हड़कंप मच गया है। निरीक्षण में मंत्री काफी भावुक नजर आई। निरीक्षण के दौरान राजेंद्र राजवंशी ब्लाक प्रमुख परसेंडी, काजल रावत खंड विकास अधिकारी परसेंडी, संजय वर्मा ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि परसेंडी, मनोज कुमार त्रिवेदी जिला सहसंयोजक मीडिया भाजपा, अनूप सिंह ग्राम प्रधान परसेंडी, राहुल सिंह, अनिलेश यादव ग्राम पंचायत अधिकारी, मुमताज ग्राम पंचायत अधिकारी, लक्ष्मण तिवारी ग्राम पंचायत अधिकारी, सुरेश वर्मा ग्राम पंचायत अधिकारी सहित अन्य अधिकारी भी मौके पर मौजूद रहे।

अपने गिरेबां में झांके पाकिस्तान:अचिन मेहरोत्रा

आतंकियों की नर्सरी है पाकिस्तान, बिलावल भुट्टो का भाजपाईयों ने फूंका पुतला

सीतापुर। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ पाकिस्तान विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो द्वारा की गई आपत्तिजनक टिप्पणी के खिलाफ भाजपाइयों का गुस्सा फूट पड़ा है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तान का पुतला फूंका है। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने कहा कि पाकिस्तान को अपने गिरेबां में झांकना चाहिए। आतंकियों की नर्सरी वाले पाकिस्तान के विदेश मंत्री भी आतंकियों की भांषा बोल रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता शहर के शहीद लालबाग पार्क में एकत्र हुए। यहां पर भाजपा जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा व सांसद राजेश वर्मा के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ता नारेबाजी करते हुए निकले। भाजपा कार्यकर्ता बोले रहे थे कि मोदी के सम्मान में, भाजपा मैदान में। भाजपा नेता व कार्यकर्ता पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी करते हुए लालबाग बाजार, घंटाघर, ग्रीकगंज आदि प्रमुख मार्गों से गुजरते हुए लालबाग चौराहे पर पहुंचे। यहां पर जोरदार नारेबाजी करते हुए पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो का पुतला फूंका। इस मौके पर जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने कहा कि विश्व का सबसे बड़ा आतंकी ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान की पनाह में रहता है। जिसे अमेरिकी सैनिक ढूंढकर निकालते हैं और मार डालते हैं। जिस देश में संविधान की कोई अहमियता नहीं है, जब चाहे तब पाकिस्तानी सेना पाकिस्तान की सरकार पलट देती है। जहां कदम कदम आतंकी पाली पोशे जाते हैं। उस देश का विदेश मंत्री आज हमारे देश के प्रधानमंत्री पर टिप्पणी कर रहा है। यह बेहद शर्मनाक बात है। आज पूरे विश्व में पाकिस्तान को सिर्फ आतंकियों की पनाहगाह के रूप में देखा जाता है। जबकि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत को वैश्विक मंच जी20 की अध्यक्षता करने का सम्मान मिला है। आज पूरे विश्व में भारत को सम्मान जनक नजरों से देखा जा रहा है। सांसद राजेश वर्मा ने कहा कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो की टिप्पणी बेहद शर्मनाक है। बिलावल को बगैर देरी किए हमारे देश के प्रधानमंत्री से माफी मांगनी चाहिए। सांसद ने कहा कि बिलवल अपने देश की समस्याओं से जनता का ध्यान भटकाने के लिए ऐसी हरकते कर रहे हैं। उनकी ओछी टिप्पणी से पूरे देश जबरदस्त गुस्सा है। इस मौके पर इस घटनाक्रम को लेकर एक निंदा प्रस्ताव राष्ट्रपति को भेजा गया है। प्रदर्शन में जिला महामंत्री विश्राम सागर राठौर, अजय विश्वकर्मा, संजय मिश्रा, रोहित सिंह, नीरज वर्मा, युवा मोर्चा जिला महामंत्री अनूप विश्वकर्मा, आकाश अग्रवाल, श्री प्रकाश सिंह, सागर गुप्ता, आलोक श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

एक वर्ष पूर्व लगे खम्भे पर आज तक नहीं हुआ विद्युतीकरण

परसेण्डी (सीतापुर)। परसेंडी विकासखंड परसेंडी के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय राही में विद्युत विभाग के द्वारा लगभग 1 वर्ष पूर्व खंभे तो लगा दिए गए लेकिन 1 वर्ष बीत जाने के बाद भी आज तक विद्युत लाइन नहीं पहुंच सकी है। जिससे विद्यालय में एवं विद्यालय के आगे की आबादी जिससे ग्रामीणों को लाइट बिना किसी रूकावट के मिल सके आज तक नहीं पहुंच सके। जिससे ग्रामीण बहुत काफी परेशान हैं एवं विद्यालय में समरसेबल एवं लाइट से इलेक्ट्रिक सामानों का भी उपयोग नहीं हो पा रहा। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग करते हुए कहा है कि प्राथमिक विद्यालय एवं ग्रामीण आबादी में विद्युत आपूर्ति कराए जाने की मांग की है। मांग करने वालों में शिल्पा सिंह प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय राही, ओम प्रकाश शुक्ला प्रधान प्रतिनिधि राही, बैजनाथ शुक्ला, बादशाह शुक्ला, श्रवण शुक्ला, सुधाकर शुक्ला, अनिल शुक्ला, दुर्गेश शुक्ला, अंबरीश शुक्ला, प्रभाकर शुक्ला सहित सैकड़ों लोगों ने विद्युत लाइन खिंचवाए जाने की मांग की है।

लेखपाल की गलत नीतियों के चलते रोड की भूमि पर कराया जा रहा पक्की बाजार का निर्माण

मिश्रिख (सीतापुर)। तहसील क्षेत्र के परगना औरंगाबाद में तैनात लेखपाल पर की गलत नीतियों के चलते गांव के एक दबंग द्वारा नैमिषारण्य जाने वाले मार्ग पर पुराने बस अड्डे के समीप रोड की भूमि पर अवैध कब्जा करके पक्की बाजार का निर्माण कराया जा रहा है। ग्रामीणों की मानें तो बाजार निर्माण कर्ताओं ने रोड की लगभग 8 फिट अपने कब्जे में कर ली है। जबकि जिम्मेदार और जानकार पूरी तरह से इस अवैध कब्जे पर चुप्पी साधे हुए हैं। जो ग्रामीणों के आवागमन में व्यवधान उत्पन्न कर रहा है। बताते चलें कि तहसील क्षेत्र के ग्राम औरंगाबाद में गांव के अंदर से नैमिषारण्य रोड को जाने वाले मार्ग पर शादाब अंसारी व शाहनवाज अंसारी पुत्रगण लतीफ अंसारी द्वारा पुराने बस अड्डे के समीप लगभग 8 फिट रोड की जमीन पर कब्जा करके मार्केट का निर्माण कराया जा रहा है। जिससे ग्रामीणों के सामने इस मार्ग पर सकुशल आवागमन की समस्या उत्पन्न हो रही है। मार्ग काफी सकरा हो रहा है। प्रशासनिक जिम्मेदार अपनी दूषित नीतियों के चलते रोड की भूमि पर कब्जा करके कराए जा रहे अवैध निर्माण को पूरी तरह से अनदेखा कर रहे हैं। जिसकी तरफ तहसील प्रशासन और जिला प्रशासन को गंभीरता से पहल करके कार्यवाही करने की आवश्यकता है। जिससे ग्रामीणों के सामने आवागमन में व्यवधान की समस्या उत्पन्न न हो सके। इस संबंध में जानकारी करने के लिए 3 बजकर 28 मिनट पर तहसीलदार मिश्रित मनीष कुमार के सीयूजी नंबर पर दो बार फोन करके संपर्क किया गया। परंतु पूरी बेल जाने के बाद भी उन्होंने फोन रिसीव करना मुनासिब नहीं समझा। गौरतलब है कि जब पत्रकारों के फोन अधिकारियों द्वारा रिसीव नहीं किए जाते हैं तो आम जनता के साथ उनका क्या सलूक होगा। यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। मामले में शासन द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं फिर भी जिम्मेदार अधिकारी अपने सीयूजी नंबरों के साथ ही वाट्सप और सोशल मीडिया पर हर समय सक्रिय रहें। ज्ञातव्य हो कि इस निर्देश का भी मिश्रिख तहसील के अधिकारियों द्वारा अनुपालन नहीं किया जा रहा है। जिसकी तरह जिला प्रशासन को गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

दो वारण्टी गिरफ्तार

बिसवां नगर (सीतापुर)। पुलिस अधीक्षक घुले सुशील चंद्रभान द्वारा जनपद में वांछित वारण्टी की नियमानुसार गिरफ्तारी एवं अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश के क्रम में थाना मानपुर पुलिस द्वारा 02 वारण्टी गिरफ्तार थाना मानपुर पुलिस टीम द्वारा वाद संख्या 199ध्08 व वाद संख्या 456ध्03 में वारण्टी गुल्लू उर्फ मूल्लू निवासी रामगोपाल पुत्र लाली निवासी भुलभुलापुर थाना मानपुर, सोबरन यादव पुत्र चन्द्रभाल निवासी तिरकोलिया थाना मानपुर सीतापुर को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया।

मंडलीय प्रतियोगिता में गोल्ड विजेता छाया का जोरदार स्वागत

सहारनपुर। लेबर कॉलोनी स्थित भगवती देवी मेमोरियल (बीडीएम) पब्लिक स्कूल में कक्षा आठ की छात्रा छाया ने अंबेडकर स्टेडियम में मंडलीय स्कूली जूडो प्रतियोगिता में गोल्ड प्राप्त कर 22 से 24 दिसंबर को होने वाली प्रदेशीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए चयन होने पर स्कूल के स्टाफ व छात्रों ने छाया के स्कूल पहुंचने पर फूल मालाएं वह मिठाई खिलाकर छाया को प्रोत्साहित कर सम्मानित किया गया स्कूल के समस्त स्टाफ व स्कूल के छात्र छात्राओं ने शुभकामनाओं के साथ कि वह होने वाले प्रदेश स्तर की प्रतियोगिता में भी गोल्ड प्राप्त कर नेशनल प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर गोल्ड प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं दी। विद्यालय के प्रबंधक डॉ अशोक मलिक ने कहा कि हमें पूर्ण विश्वास व आशा के साथ की विद्यालय की छात्रा छाया अपने मां–बाप के नाम के साथ–साथ स्कूल का नाम जनपद का नाम पर देश का और देश का नाम रोशन करेगी इन शुभकामनाओं के साथ छाया का स्कूल प्रांगण में जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्रीमती सुषमा मलिक प्रिया भावना अंजली यादव हरेंद्र कुमार के साथ–साथ छात्र–छात्राओं में शालू निशा अंशिका मलिक लक्ष्य मलिक कनिका अनमोल अक्षित रमेश अब्दुल हिमांशु कार्तिक मनीष आदि उपस्थित रहे।

एक बार फिर हरदोई का शिक्षा महकमा सवालों के घेरे में

हरदोई में 68 फर्जी शिक्षकों ने हड़पा 11 करोड़

हरदोई। शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार सर चढ़कर बोल रहा है जिसकी बानगी यह भी है। कि फर्जी शिक्षक को हटाने में जिन आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही की गई उनसे रिकवरी करने के बजाए जिम्मेदारों द्वारा अभय दान दे दिया गया और फिर एक बार रिकवरी का जिंजर बोतल से बाहर आया तो विभाग में हड़कंप मच गया।सालों से विभाग रिकवरी नही कर पा रही है।महानिदेशक के आदेश के बाद दोबारा से कार्रवाई शुरू की है।हरदोई में शिक्षा विभाग का बड़ा कारनामा सामने आया है यह फर्जी शिक्षकों ने बेसिक शिक्षा विभाग का 11 करोड़ से अधिक रुपए हड़प लिया जिसके रिकवरी की फाइल विभाग ने ठंडे बस्ते में डाल दी थी अब दोबारा से शिक्षा महानिदेशक के आदेश जारी करते हुए रिकवरी करने के आदेश दिए हैं। आपको बताते चलें, बेसिक शिक्षा विभाग में फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नौकरी पाने वाले 68 जालसाज शिक्षक विभाग का घ्11 करोड़ 45लाख रुपयेहड़प कर गए विभाग अभी तक उनसे वेतन के रूप में दी गई धनराशि वसूल नहीं पाया है। महानिदेशक शिक्षा ने सभी शिक्षकों से रिकवरी करने के निर्देश दिए हैं। मिली जानकारी के अनुसार, बेसिक शिक्षा विभाग में विभिन्न भर्तियों में फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर नियुक्तियां हुई थी इनकी जांच में 117 शिक्षकों के खिलाफ विभाग ने रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद बर्खास्तगी की कार्रवाई की थी, इनमें 68 शिक्षकों को वेतन जारी किया गया था उन्होंने विभाग से 2 साल तक वेतन भी प्राप्त किया था। शिक्षकों से वसूली के आदेश दिए गए थे लेकिन एक भी शिक्षक से वसूली नहीं की जा सकती है विभागीय मिलीभगत से फाइल दब कर रह गई।जनपद में 117 में से 68 शिक्षकों ने वेतन के रूप में घ114300502 जमा कराए जाने थे इस संबंध में खंड शिक्षा अधिकारियों को कार्रवाई के लिए लिखा गया लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। महानिदेशक स्कूल शिक्षा में हरदोई में बर्खास्त शिक्षकों से खेत रिकवरी के आदेश दिए हैं शिक्षा महानिदेशक का पत्र आने के बाद विभाग में खलबली मच गई और रिकवरी की फाइल एक बार फिर से शुरू हो गई बीएसए विनीता की ओर से इस संबंध में सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को पत्र जारी कर कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया गया है।

पीड़िता ने पति पर अप्राकृतिक संबंध बनाए जाने का लगाया आरोप

सिधौली (सीतापुर)। क्षेत्र के रामपुर कला थाना निवासी एक महिला ने अपने पति पर अप्राकृतिक संबंध बनाए जाने का दबाव डालने का आरोप लगाते हुए क्षेत्राधिकारी से शिकायत की है। पीड़िता का कहना है कि रामपुर कला थाना में उसने इसकी शिकायत की थी लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। प्रार्थना पत्र में महिला ने बताया कि उसका विवाह 10 वर्ष पूर्व हुआ था। उसका पति अत्यंत शराबी है और घर आकर वह शराब के नशे में उससे अप्राकृतिक संबंध बनाने से बनाए जाने का दबाव डालता है। जिसको लेकर जब वह मना करती है तो उसका पति उसे पीटता है। रस्सी से हाथ बांधकर कपड़ा मुंह में कपड़ा ठूंस देते हैं और जबरदस्त तरीके से प्रताड़ित करते हैं। पीड़ित महिला ने बताया कि जब उसने इसकी जानकारी अपने जेठानी अन्य परिजनों को दी तो उन लोगों ने भी कोई मदद नहीं की। बीते दिन भी शराब के नशे में उसके पति ने उसे अप्राकृतिक संबंध बनाने को कहा जब मना किया तो उसे जमकर पीटा। ग्रामीणों द्वारा मदद किए जाने पर वह अपने भाई के यहां चली गई। पीड़िता ने बताया कि रामपुर कला थाना में इसकी उसने शिकायत की थी। लेकिन वहां पर प्रार्थना पत्र को बदलवा दिया गया और दूसरी तहरीर लिखवाई गई। जिसमें उक्त आरोपों का कहीं पर भी वर्णन नहीं था। पीड़िता ने क्षेत्राधिकारी सिधौली से न्याय की गुहार लगाई है।

जनपद में आयोजित हुई जिला स्तरीय कौशलाथान प्रतियोगिता

सहारनपुर। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित जिला स्तरीय कौशलाथान प्रतियोगिता में छात्रों द्वारा बेहतर प्रदर्शन करने पर उन्हें सम्मानित किया गया। कौशलाथान प्रतियोगिता कुल 15 सेक्टरों में आयोजित की जानी थी, जिसमें जनपद–सहारनपुर में 10 सेक्टरों में प्रशिक्षार्थियों के पंजीकरण के उपरान्त परीक्षा हुई। इस दौरान हर सेक्टर में प्रथम पुरस्कार विजेता को 1000 रूपये, द्वितीय, तृतीय, चुर्तथ एवं पंचम पुरस्कार विजेता को क्रमशः 800, 600, 400 एवं 200 का नगद पुरस्कार प्रमाण–पत्र सहित दिया गया। नोडल प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार द्वारा उपस्थित छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि व्यवसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग की एक अच्छी पहल है, जिसमें जनपद के युवाओं का रूझान व्यावसायिक शिक्षा की ओर आकर्षित होगा एवं प्रशिक्षार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य में आगे बढने के लिये प्रोत्साहित करेगा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती पिंकी गुप्ता सभासद एवं आयोजक प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार एवं संयुक्त निदेशक, श्री आशीष दुबे रहे एवं कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये श्री दिलशाद, कार्यदेशक, श्री पवन सिंह, जिला प्रबन्धक कौशल विकास, श्री वीके सोलंकी, कार्यदेशक, श्री शकील हसन, कार्यदेशक एवं संस्थान का समस्त स्टॉफ उपस्थित रहे।

समाजवादी विकास की बात करते हैं भाजपा लड़ा कर फायदा लेती है: एडवोकेट आदर्श

हरदोई। शाहाबाद के स्टार मैरिज लॉन में सपा नेता नईम अंसारी द्वारा आयोजित विशा ल समाजवादी समागम संगोष्ठी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव एडवोकेट हाई कोर्ट आदर्श दीपक मिश्रा संबोधित करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी हमेशा समाज को एकता अखंडता में जोड़ने की की बात करती है लेकिन भाजपा सरकार हम सबको आपस में लड़ा कर राजनीतिक फायदा की सोचती है आने वाले समय में नगर पालिका चुनाव में पुरजोर तरीके से सभी से लगने की अपील की। समाजवादी विकास की बात करते हैं और भाजपा आपस में लड़ा कर अपना फायदा लेती है इससे जनता को सचेत रहने की आवश्यकता है। सपा नेता नईम अंसारी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि देश आजाद होने के बाद पहली बार शाहाबाद का सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि नगरपालिका की सीट ओबीसी के लिए हुई है समाजवादी साथियों से अपील है इस गरीब नौजवान को बेटे को मजबूती के साथ लड़ाने का काम करें।संगठन को मजबूत करने का काम करें।आने वाले भविष्य में अखिलेश यादव के हाथों को मजबूत करने का करने का काम करें।2024 की लड़ाई में हम सब एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ने का काम करेंगे।अभी हम सबकी जिम्मेदारी है नगर पालिका चुनाव में ज्यादा से ज्यादा सहयोग कर हम को मजबूत करने का काम करें। हम सब मिलकर समाज को एकता अखंडता के साथ एकजुटता के साथ तरक्की विकास की बात करते है शाहाबाद की तरक्की विकास नगर पालिका का कैसे हो इस पर चर्चा करेंगे समाजवादी समागम कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सपा नेता आलोक वर्मा, राम श्रीवास्तव, बाकी मंच का संचालन लोहिया वाहिनी के पूर्व नगर अध्यक्ष हनीफ कुरैशी , मंच की अध्यक्षता कर रहे तनवीर खान और सपा नेता शोऐब खान और सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अवैध हथियार समेत हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

नैमिषारण्य (सीतापुर)। जनपद में चलाये जा रहे अपराधियों के विरूद्ध अभियान के तहत अवैध हथियार समेत हिस्ट्रीशीटर आरोपी गिरफ्तार किया गया है। थाना नैमिषारण्य पुलिस टीम द्वारा चेकिंग दौरान आरोपी अलाउद्दीन पुत्र जलालुद्दीन निवासी ग्राम अटवा को 1 अवैध असलहे के साथ बरामद किया गया है पर पूर्व में चोरी, नकबजनी 9 अवैध शस्त्र रखने व बनाने के मुकदमें पंजीकृत हैं। जिस पर पुलिस प्रशासन विधिक कार्यवाही की जाएगी।

अखिल भारतीय सर्व वैश्य एकता महासभा महिला प्रकोष्ठ ने जरूरत मंदों को गर्म कपड़े,फल बिस्कुट बांटे

हरदोई।अखिल भारतीय सर्व वैश्य एकता महासभा हरदोई महिला प्रकोष्ठ की जिला इकाई द्वारा निर्धन जरूरतमंद छोटे छोटे बालक, बालिकाओं को गर्म स्वेटर तथा फल बिस्किट आदि का वितरण किया गया। कार्यक्रम में संगठन के पदाधिकारियों जिला अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ रीना गुप्ता,सुनीता गुप्ता, कोकिल गुप्ता,विभा गुप्ता,शानू गुप्ता,सीमा गुप्ता,प्रभा गुप्ता,पल्लवी अग्रवाल,रूपाली,सुषमा,अलका आदि के साथ साथ बड़ी संख्या में सदस्यों ने सहभागिता की।

मानक से कम हैं युवा कल्याण अधिकारी, कैसे हो युवाओं का विकास

महराजगंज। युवाओं के विकास की बात तो हर जगह सुनने को मिल रही है। मगर आधी–अधूरी व्यवस्था की वजह से उनके विकास में समस्या आ रही है। जिले के 12 में से छह ब्लॉकों में अभी भी स्थायी रूप में क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी की तैनाती नहीं है। लिहाजा युवाओं को नियमित रूप से बेहतर प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा है। 12 ब्लॉक वाले इस जिले में मानक के मुताबिक 12 क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी की तैनाती होनी चाहिए। वर्तमान में कुल छह क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी की तैनाती है। वे तैनाती के मुताबिक प्रांतीय विकास दल से जुड़े कार्यों का पर्यवेक्षण तो कर रहे हैं, मगर युवाओं के विकास की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों में तेजी नहीं दिख रही है। इस समय सदर, पनियरा, परतावल, निचलौल, फरेंदा व लक्ष्मीपुर में क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारियों को तैनाती दी गई है। शेष ब्लॉक में उन्हीं क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। अतिरिक्त प्रभार मिलने से सभी एक ब्लॉक में नियमित रूप से ध्यान नहीं दे पा रहे हैं जिससे युवाओं के अभ्यास में नियमितता नहीं बन पा रही है। संसाधनों के लिए भी पड़ रहा है जूझनाः नियमित रूप से क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी के तैनात न होने से युवा संसाधनों से भी जूझ रहे हैं। एक बार सामान के खराब होने के बाद मंगल दल व युवाओं को संसाधन की उपलब्धता के लिए सोचना पड़ जा रहा है। खेमपिपरा के खिलाड़ी ऋषभ व मिठौरा की खिलाड़ी सलोनी ने कहा कि समय–समय पर संसाधन मिल जाए तो उनकी मुश्किल कुछ हद तक कम हो जाए।

समूह की महिलाओं ने तहसील पर किया प्रदर्शन

निचलौल। ब्लॉक के डोमा खास गांव के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने तहसील परिसर में प्रदर्शन किया। उन्होंने अधिकारियों को शिकायती पत्र देकर धोखाधड़ी करने वालों पर कार्रवाई की मांग की। नर्वदा, लालती, मालती, विंदा, शारदा, माया, मीना, सोनमती, कोइली ने कहा कि वह मुसहर बस्तियों में स्वयं सहायता समूह संचालित कर रही है। दुर्गा महिला ग्राम संगठन के खाते में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के विभिन्न मदों से एक लाख 80 हजार रुपये भेजे गए थे। ब्लॉक मिशन मैनेजर ने समूह की अध्यक्ष सुमित्रा देवी और कोषाध्यक्ष को गुमराह करते हुए दो बार में 73 हजार पांच सौ रुपये निकाल लिए। जानकारी के बाद विरोध करने पर बीएमएम ने इस धनराशि को जिले पर देने की बात कहते हुए पल्ला झाड़ लिया। शिकायत करने पर ब्लॉक मिशन मैनेजर की ओर से समूह की महिलाओं को मोबाइल फोन पर धमकी दी जा रही है।

सड़क दुर्घटना में बीआरसी कार्यालय का ऑपरेटर घायल

लालगंज, मीरजापुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के लहंगपुर चौकी अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग 135 के सर्विस रोड पर 10:30 बजे एक बाइक सवार अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर गया। बाजारवासियों ने बाइक चालक को घायलावस्था में एंबुलेंस 108 से मीरजापुर मंडलीय अस्पताल भेजा। लालगंज थाना क्षेत्र के लहंगपुर चौकी अंतर्गत लहंगपुर बाजार के सर्विस रोड पर मोनू शर्मा उर्फ वेद प्रकाश शर्मा पुत्र विजय शंकर शर्मा उम्र 30 वर्ष निवासी भटवारी मीरजापुर अपनी बाइक से लहंगपुर स्थित बीआरसी कार्यालय आ रहा था कि लहंगपुर बाजार के सर्विस रोड पर अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर गया। सड़क पर गिरने से बाइक चालक मोनू शर्मा का दाहिना पैर टूट गया। मौके पर पहुंची पुलिस व बाजारवासियों की मदद से घायल मोनू शर्मा को एंबुलेंस से मंडलीय अस्पताल उपचार के लिए ले जाया गया। बताया गया कि मोनू शर्मा बीआरसी कार्यालय में कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत है।

पति ने पत्नी पर कुल्हाड़ी से किया वार, पुलिस ने किया गिरफ्तार

मीरजापुर । लालगंज थाना क्षेत्र के बरौधा चौकी अंतर्गत निबावल गांव निवासी पति–पत्नी के आपसी कहासुनी में कुल्हाड़ी से पत्नी पर पति ने कुल्हाड़ी से वार कर दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। परिजनों की सूचना पर पहुंची पुलिस सामुदायिक स्वास्थ्य लालगंज ले गई। जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। मृत्यु की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। निबावल गांव निवासी रेखा 35 वर्ष के पति भरत लालने किसी बात को लेकर पत्नी से कहासुनी हो गई।जिससे पति भरत लाल क्रोधित हो गया और घर की कुल्हाड़ी से पत्नी पर हमला कर दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। आनन–फानन में परिजनों ने पुलिस को सूचित किया और सूचना मिलने पर थाना प्रभारी ज्ञानू प्रिया अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंचकर घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लालगंज ले गई। जहां चिकित्सकों ने देखने के बाद मृत घोषित कर दिया। मौत खबर लगते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतका को दो पुत्र सुशील कुमार 15 वर्ष एवं सौरभ 8वर्ष एवं एक पुत्री सरिता 12 वर्ष है वही पुलिस मृतका के पति भरत लाल को कुल्हाड़ी सहित गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस शव को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई में जुट गई वही मृतका के परिजनों में कोहराम मच गया।

डिवाइडर से टकराकर दो बाइक सवार दोस्तों की हुई मौत

मीरजापुर । डिवाइडर से टकराकर तेज रफ्तार बाइक सवार दो दोस्तों की मौत हो गई है। जानकारी के अनुसार दोनों दोस्त नाइट शिफ्ट की ड्यूटी के लिए कंपनी जा रहे थे, कि तभी रास्ते में दोनों हादसे का शिकार हो गये। पुलिस के अनुसार एक मिर्जापुर जिले के चुनार थाना क्षेत्र के सराय टेकौर का रहने वाला है तो दूसरा गाजीपुर जनपद के दिलदारनगर थाना क्षेत्र के भक्ति गांव का रहने वाला है। दोनों चुनाप के दुमदुमा गांव स्थित महामाया सरिया कंपनी काम करते थे. सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना चुनार थाना क्षेत्र के चेचरी मोड़ के पास की बताई जा है।

अधिवक्ताओं ने आयुक्त को सौंपा ज्ञापन

लालगंज(मीरजापुर) उपरौध अधिवक्ता समिति के अध्यक्ष के नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने संपूर्ण समाधान दिवस में कमिश्नर मुथु कुमार स्वामी बी को ग्राम न्यायालय शुभारंभ किए जाने का ज्ञापन दिया गया. अधिवक्ताओं ने बताया कि ग्राम न्यायालय का भवन बनकर तैयार है लेकिन विभागीय कार्यप्रणाली के चलते शुभारंभ में विलंब हो रहा है। समिति के अध्यक्ष अनिल शुक्ला ने ज्ञापन में आरोप लगाया कि लालगंज में ग्राम न्यायालय चलाने में उदासीनता की जा रही है। जिसके कारण अधिवक्ता आक्रोशित हैं। बताया कि यह तहसील मध्य प्रदेश बॉर्डर तक की सीमा तक बनी हुई है जहां के फरियादी मिर्जापुर लंबी दूरी तय करके महंगे न्याय के लिए परेशान हो रहे हैं। लंबी दूरी के कारण वादकारियों का समय और पैसा दोनों बर्बाद हो रहा है। ज्ञापन देने वालों में ह्रदय शंकर चतुर्वेदी, कैलाश पति त्रिपाठी, केदारनाथ शुक्ला, प्रभुनाथ दुबे,श्याम नारायण यादव, राजेंद्र मौर्य, अनिल मौर्या ,प्रवीण जायसवाल, मिथिलेश पांडे, शिवम पांडे, विपिन तिवारी, उमेश दुबे,सुनील शुक्ला आदि रहे।

विजयपुर व बसुली में बनेगी हाईटेक नर्सरी, लाभान्वित होंगे किसान

महराजगंज। सदर ब्लॉक क्षेत्र के विजयपुर व निचलौल ब्लॉक क्षेत्र के बसुली में हाईटेक नर्सरी का निर्माण होगा। इससे जहां किसानों को फलों व सब्जियों की उन्नतशील खेती के बारे में प्रशिक्षण प्राप्त हो सकेगा, वहीं उनकी आय में भी वृद्धि हो सकेगी। मनरेगा से बनने वाली इन नर्सरियों पर जहां कुल 3.78 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे, वहीं कुल 20 हजार से अधिक मानव दिवस का भी सृजन हो सकेगा। महराजगंज जिले को कृषि प्रधान जिले के रूप में पहचाना जाता है। जिले में लगभग पांच लाख किसान चिह्नित हैं। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से वे धान, गेहूं, सब्जी व फल की खेती से जुड़े हैं। तकनीक के बढ़ते युग में किसान और बेहतर ढंग से उन्नतिशील खेती कर सकें, इस दिशा में प्रशासनिक व विभागीय स्तर से भी कवायद की जा रही है।

उद्यान विभाग की ओर से सब्जी, फल व अन्य खेती से जुड़े किसानों को समय–समय पर बेहतर ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए मनरेगा योजना के तहत विजयपुर व बसुली में हाईटेक नर्सरी का निर्माण कराया जाएगा। नर्सरी के बनने के बाद आसपास के किसानों को उससे जोड़ते हुए उन्हें प्रशिक्षित तो किया ही जाएगा, नर्सरी भी तैयार कराते हुए उनके आय को बढ़ाने की पहल की जाएगी।

प्रत्येक नर्सरी के निर्माण पर 1.89 करोड़ होंगे व्ययः उद्यान निरीक्षक विकास श्रीनेत ने बताया कि जिले में बनने वाले दो नर्सरी में से प्रत्येक नर्सरी के निर्माण पर 1.89 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। इस धनराशि से हाईटेक नर्सरी के साथ डेमो प्लाट, टायलेट ब्लॉक, वर्किंग शेड व इंटरलाकिंग का निर्माण होगा। वहीं, बीज व अन्य निवेश के साथ ही मिट्टी भराई के कार्य को प्राथमिकता दी जाएगी।

दोनों नर्सरी में दस–दस हजार मानव दिवस का होगा सृजनः मनरेगा से बनने वाली दोनो नर्सरी को बनाने में दस–दस हजार मानव दिवस का सृजन होगा। इससे गांव के मजदूरों को काम मिल जाएगा व निर्माण भी सहूलियत के साथ हो जाएगा।

लापरवाही पर एक लेखपाल निलंबित, दूसरे को कारण बताओ नोटिस

महराजगंज। जिले के सभी चार तहसीलों में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन हुआ। चारों तहसील में कुल 339 मामले दर्ज किए गए जिसमें से 41 मामलों का ही मौके पर निस्तारण हो सका। शेष मामलों के निस्तारण के लिए संबंधित विभाग को निर्देशित किया गया। निचलौल में आयोजित जिला स्तरीय तहसील दिवस में जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने लापरवाही पर एक लेखपाल को निलंबित कर दिया जबकि दूसरे के खिलाफ कारण बताओ नोटिस जारी किया।

निचलौल प्रतिनिधि के मुताबिक तहसील सभागार में . जिला स्तरीय संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 140 मामले आए, जिसमें 10 मामलों का मौके पर निस्तारण किया गया। शेष बचे 130 मामलों को जल्द निस्तारित करने के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया गया। वरासत में लापरवाही करने के मामले में लेखपाल फेंकू प्रसाद को निलंबित कर दिया गया। जबकि बड़े पैमाने पर भूमि पैमाइश की शिकायत मिलने पर लेखपाल विशाल भारती को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। संपूर्ण समाधान में सबसे अधिक राजस्व से संबंधित मामले दर्ज किए गए। इस दौरान एसडीएम सत्यप्रकाश मिश्रा, क्षेत्राधिकारी सूर्यबली मौर्य समेत अन्य लोग मौजूद रहे। सदर तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी मोहम्मद जसीम की अध्यक्षता में आयोजित समाधान दिवस में कुल 45 मामले आए, जिसमें से दस मामले को मौके पर निस्तारित किया गया, शेष के निस्तारण के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया गया। नौतनवां प्रतिनिधि के मुताबिक, तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी दिनेश कुमार मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित समाधान दिवस में कुल 65 मामले आए, जिसमें से आठ का मौके पर निस्तारण किया गया। शेष के निस्तारण के लिए संबंधित विभाग को निर्देशित किया गया। फरेंदा प्रतिनिधि के मुताबिक तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी मुकेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 89 मामले आए जिसमें से 13 का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। शेष के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

बुजुर्गों का आशीर्वाद जीवन की सबसे बड़ी पूंजीः सुरेश चंद्रा

कुशीनगर (आरएनएस)। स्वव नवल किशोर सिंह की 31 वीं पुण्यतिथी के अवसर पर साखोपार में आयोजित नवल स्मृति समारोह में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर चिकित्सा शिविर, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम,मेला व विराट कुश्ती दंगल का आयोजन किया गया। जिसमें पहलवानों ने अपने कौशल का परिचय दिया।स्मृति समारोह में अपर मुख्य सचिव श्रम एवं सेवायोजन मुख्य अतिथि सुरेश चंद्रा ने कहा कि आज से 30 वर्ष पूर्व मैं यहां ज्वाइंट मजिस्ट्रेट था। तब इतना विकसित नहीं था किंतु अब कुशीनगर विकसित हो चुका है। आप बुजुर्गों द्वारा सीख और आशीर्वाद ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी होती है। आप सब अपने माता पिता का नाम रोशन करें। पूर्व जिलापंचायत अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने कहा कि हमारे भारतीय संस्कृति में पुरानी खेल विधा कुश्ती है। इस तरह का आयोजन हमें भाईचारा, समाज, राष्ट्र, वसुधैव कुटुंकम का संदेश देता है। पूर्व मंत्री राजेश सिंह ने कहा कि सशक्त भारत बनाने के लिए यंग इंडिया कदम आगे बढ़ा चुका है। 70 फीसदी आबादी नौजवानों की है। खेल रुचि के अनुसार खेलें । आगे बढ़ेंगे। अतिथियों ने आयोजन के लिए एबीपीएसएस प्रदेश अजय प्रताप नारायण सिंह व परिवार की सराहना की। अतिथियों सहित स्व सिंह के परिजन बीओसीडब्ल्यू बोर्ड मेम्बर अभय प्रताप नारायण सिंह, पीयूष प्रताप नारायण सिंह, शैलेश प्रताप नारायण सिंह, अधिवक्ता कुशल प्रताप नारायण सिंह आदि ने स्वव नवल किशोर सिंह व स्व विजय प्रताप नारायण सिंह के समाधि पर पुष्पार्चन किया । आयोजकों ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया और कलाकारों ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कुश्ती दंगल के शुभारम्भ के पहले अखाड़े पर हनुमान जी का पूजन अर्चन कर किया गया। कुश्ती का शुभारम्भ महन्थ विश्वम्भर दास, विधायक सुरेंद्र कुशवाहा, विधायक विवेकानन्द पाण्डेय, भाजपा प्रभारी रमेश सिंह, पूर्व मन्त्री छठ्ठू राम, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा जगदम्बा सिंह, ब्लाक प्रमुख आशुतोष बहुगुणा, विक्रमा यादव, जिला कुश्ती संघ अध्यक्ष अखिलेश्वर उपाध्याय, चौयरमैन विनय जायसवाल, पूर्व मंत्री राजेश सिंह, कृष्णा नन्द तिवारी, पत्रकार सुनील चौधरी, अमित कश्यप ग्राम प्रधान व पत्रकार गण ने पहलवानों का हाथ मिलवाकर किया। 21 जोड़ हुए कुश्ती में पहलवानों ने अपने प्रतिद्वंदियों को आसमान दिखाया। महिला पहलवानों ने भी कुश्ती के जोड़ आजमाए। अनुज हरियाणा ने प्रसाद पुर के शिवा सिंह को आसमान दिखाया। जबकि सत्येंद्र पड़रौना ने सोनू आगरा को हराया। इसी क्रम में अंगद जटहा बाजार ने रितिक हाटा, मुकेश प्रेमनगर ने फुलमान जटहा, छोटू पड़रौना ने सोनाड़ी के विकास, वीर बहादुर पड़रौना ने बरवा के अंकित, पुष्पा पड़रौना ने नन्दनी गोरखपुर को हराया। कई जोड़ी बराबर पर रही। इस अवसर पर भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। गीत संगीत सुप्रसिद्ध गायक रामदरश शर्मा, मुकेश सिंह, पिंटू प्रीतम, साक्षी श्रीवास्तव आदि ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर चिकित्सा कैम्प में

डा. एसके सिंह, डॉ अजय शाही, डॉ नारायण, डॉ रंजीत सिंह, डॉ इंद्रजीत की टीम, डॉ देवेंद्र, डॉ वेद प्रकाश तिवारी, पवन, संतोष आदि ने मरीजों की जांच कर निःशुल्क दवा दी। उद्यान विभाग की ओर से प्रभारी मोहन पासवान, मंगनीलाल, अवधेश, संजय के देखरेख में फल व सब्जियों की प्रदर्शनी लगाई गई। कार्यक्रम संचालन अनूप कुमार मिश्रा व कुश्ती का पवन उपाध्याय ने किया जबकि रेफरी के रूप में बजरंगी यादव रहे। आभार अभय प्रताप नारायण सिंह ने व्यक्त किया। इस अवसर पर सहभोज का आयोजन हुआ।इस मौके पर पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने भी पहलवानों से हाथ मिलवाये तथा आयोजकों द्वारा उनका भी स्वागत किया गया। सलमा आयत, डीके पाण्डेय, राहुल गोंविन्द राव, राकेश कुमार जायसवाल, महेंद्र तिवारी, आदित्य सिंह, पप्पू पाण्डेय, विजय सिंह, चन्द्र भूषण पाण्डेय, विन्यकान्त मिश्रा, ओमप्रकाश जायसवाल, विवेक कुमार वर्मा, संजय शुक्ला, सत्यम सिंह, सहित हजारों लोग मौजूद रहे।

समाधान दिवस पर आयुक्त ने दिए सख्त निर्देश तालाब भीटा के जमीनों को करायें खाली

मीरजापुर । विंध्याचल मंडल के कमिश्नर मुथु कुमार स्वामी बी की अध्यक्षता में लालगंज में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। वह फरियादियों की सुनवाई करते दौरान चेतावनी भरे लहजे में लेखपालों को हिदायत दिया कि पट्टेदारों की जमीन पर अवैध अतिक्रमण पाए जाने पर अतिक्रमण कर्ताओं के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराते हुए जमीन खाली कराएं। लालगंज तहसील सभागार में आयोजित समाधान दिवस में कमिश्नर मुथुकुमार स्वामी बी तालाब की जमीन पर वरासत पाई जाने के बाद जमीन खाली कराने का तहसील प्रशासन को जमीन खाली कराने का दिया निर्देश। उन्होंने तालाब की भूमि पर अवैध कब्जा ना हो इस बात को लेकर राजस्व कर्मियों को चेतावनी दिया। ग्राम प्रधान मड़वा द्वारा दिए गए प्रार्थना पत्र को गंभीरता से लेते हुए कमिश्नर ने तहसील प्रशासन को निर्देशित किया कि तालाब के बेटे पर अवैध अतिक्रमण खाली कराकर सूचना प्रेषित करें। समाधान दिवस में उन्होंने तहसील के 175 लेखपालों उपस्थिति में निर्देशित किया कि तालाब के भीटटा और पट्टे की जमीन खाली रहनी चाहिए। ज्वाइंट मजिस्ट्रेट नवनीत से हराने फरियादियों की सुनवाई के दौरान डोर टू डोर पेयजल योजना के एक्सीडेंट को पत्र लिखकर खजूरी गांव निवासी के घर कनेक्शन दिए जाने का निर्देश दिया। इस अवसर पर तहसीलदार शशांक शेखर राय, नायब तहसीलदार मधु जैन, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ संजय सिंह, खंड विकास अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी संजय कुमार यादव, रेंजर के के सिंह तहसील स्तरीय अधिकारी कर्मचारी राजस्व कर्मी मौजूद रहे।

अपर जिलाधिकारी ने धान क्रय केन्द्रो का किया निरीक्षण

मीरजापुर । जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के निर्देश के अनुपालन में अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल ने तहसील लालगंज क्षेत्रान्तर्गत धान कय केन्द्र का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी ने खाद्य विभाग विपणन शाखा क्रय केन्द्र लालगंज प्रथम द्वितीय व तृतीय– निरीक्षण के समय प्रथम व तृतीय केन्द्र के प्रभारी दशरथ व द्वितीय केन्द्र के प्रभारी बर्मा सिंह मौके पर उपस्थित रहे। उक्त केन्द्रों पर 1493 किसानों द्वारा सम्पर्क किया गया है। केन्द्र प्रथम पर 44 किसानों से 3404.40 कु. खरीद हुई है, जिसके सापेक्ष 2180 कु. का उठान किया गया है तथा 35 किसानों का भुगतान किया गया है। केन्द्र तृतीय पर 40 किसानों से 2376.40 कु. की खरीद हुई है, जिसके सापेक्ष 1020 कु. उठान हुआ है तथा 32 किसानों का भुगतान किया गया है। इसी प्रकार केन्द्र द्वितीय पर 40 किसानों से 2084 कु. खरीद के सापेक्ष 2020 कु. उठान किया गया है तथा 33 किसानों का भुगतान किया गया है। केन्द्र प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि अवशेष धान का उठान व कृषकों का भुगतान करते हुए पारदर्शी तरीके से खरीद सुनिश्चित करें।

पुलिस ने 6 लोगो पर मुकदमा दर्ज कर शांति भंग मे किया चालान

दैनिक बुद्ध का संदेश

परसामालिक,नौतनवा। परसामलिक पुलिस ने रविवार को थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत रेहरा निवासी रामदौड सिह पुत्र स्व विक्रम सिह के तहरीर पर गांव निवासी सीरताज यादव पुत्र शिवपूजन उम्र 21 वर्ष, सुग्रीव पासवान पुत्र रामहित उम्र 24 वर्ष,मार्कान्डेय पुत्र श्याम सुंदर पान्डेय उम्र 26 वर्ष, प्रशांत यादव उर्फ बोदई पुत्र विशनाथ यादव उम्र 21 वर्ष निवासी रेहरा एव रामसुरत

उर्फ सुराती पुत्र गनपत सहानी उम्र 28 वर्ष, राममिलन उर्फ मंन्टू पुत्र कोईल उम्र 40 वर्ष निवासी रेहरा टोला महुलानी पर एक राय होकर गाली गलौज मारपीट करने के सम्बंध मे लोगो मे कहासुनी होने के बाद मामला थाने पहुचने के बाद भी लोगो मे समाजंसय नही बनने के बाद पुलिस ने रामदौड सिह के तहरीर पर सभी उपरोक्त 6 लोगो पर मुकदमा अपराध संख्या 144ध्22 की धारा 427ध 506 पंजिकृत कर सभी लोगो पर सीआरपीसी की धारा 151 मे पाबंद कर सभी आरोपियों को उपजिलाधिकारी न्यायालय नौतनवां भेज दिया। वही पुलिस टीम मे उपनिरीक्षक शैलेन्द्र यादव हेड कांस्टेबल शिव कृपा शुक्ल व कान्सटेबल पवन कुमार राहुल कुमार गुप्ता सहित आदि मौजूद रहे।

भाजपाइयों ने किया पुतला दहन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर। रविवार को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भाजपाइयों ने डुमरियागंज चौराहे पर पाकिस्तानी विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो

का पुतला दहन किया। पिछले दिनों बिलावल भुट्टो ने भारतीय प्रधानमंत्री को लेकर अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए एक बयान दिया था, जिस पर भारतीय विदेश मंत्री ने उनको और पाकिस्तान को जवाब भी दिया था। बिलावल भुट्टो के उसी बयान को लेकर भाजपाइयों में गहरा आक्रोश है । रविवार को भाजपा मंडल अध्यक्ष अमरेंद्र त्रिपाठी की अगुआई में भाजपा कार्यकर्ताओं ने बिलावल भुट्टो मुर्दाबाद का नारा लगाते हुए, पुतला दहन किया। इस दौरान भाजपा नेता मधुसूदन अग्रहरि, अजय पाण्डेय, रमेश सोनी, अशोक अग्रहरि, पंडित राकेश शास्त्री, भोला सोनी,मकेश्वर पाण्डेय सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

तीन लाख रुपये लेकर विवेचना में हेरफेर करने वाले दरोगा पर मुकदमा दर्ज

कुशीनगर। हत्या के प्रयास सहित अन्य गंभीर धाराओं में दर्ज मुकदमे में तीन लाख रुपये लेकर विवेचना मे हेराफेरी करने वाले दरोगा दीनानाथ पाण्डेय पर हनुमानगंज थाना में भ्रष्टाचार सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी गई है। यह कार्रवाई पीड़िता शिकायत पर कराये गये जांच के बाद एसपी के निर्देश पर की गयी है।

एसपी की इस कार्रवाई से पुलिसकर्मियों में हड़कंप मचा हुआ है। गौरतलब हो कि जिले के विशुनपुरा थाना क्षेत्र के गांव दुदही निवासी अजय सिंह ने 21 मार्च 2022 को अपने विपक्षी 13 लोगों के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का प्रयास, खतरनाक हथियार का प्रयोग, गंभीर रूप से घायल करने, जानबूझकर चोट पहुंचाने, बलवा आदि धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया था।

इस मामले की विवेचना हनुमानगंज थाना में तैनात दरोगा दीनानाथ पांडेय को सौंपी गई थी। आरोप है कि विवेचक दीनानाथ पाण्डेय ने वादी मुकदमा अजय सिंह की पत्नी नमिता सिंह से मुकदमे में धारा 308 (गैर इरादतन हत्या के प्रयास की) को 307 (हत्या के प्रयास) में तरमीम करने के लिए तीन लाख रुपये मांगे। महिला ने दो बार में दरोगा को तीन लाख रुपये का भुगतान कर दिया, लेकिन दरोगा ने कोई कार्रवाई नहीं की। उधर, विवचेक ने आरोपी पक्ष के लोगों से मुकदमे में नाम हटाने के बदले भी एक लाख रुपये वसूली कर ली। इसकी जानकारी होने पर पीड़ित ने डीआईजी जे. रविंद्र गौंड से मिलकर कार्रवाई की गुहार लगाई। डीआईजी ने प्रकरण की जांच का निर्देश एसपी धवल जायसवाल को दिया। जांच में दरोगा के खिलाफ प्रमाण मिलने पर हनुमानगंज थाना में भ्रष्टाचार सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया गया। दरोगा के खिलाफ दर्ज मुकदमे की जांच सीओ खड्डा संदीप वर्मा को सौंपी गई है। इस संबंध में सीओ संदीप वर्मा ने बताया कि आरोपी दरोगा को निलंबित कर दिया गया है। उसके खिलाफ विभागीय जांच भी चल रही है। दर्ज मुकदमे में साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

भागवत कथा के तीसरे दिन भक्त प्रहलाद चरित्र का हुआ वर्णन

भागवत कथा एक ऐसा अमृत है जिसका जितना भी पान किया जाए मन तृप्त नहीं होता है : विष्णु प्रिया शास्त्री

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। नगर स्थित आर्य समाज मंदिर में सौरभ कुमार भारद्वाज के नेतृत्व में चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के तीसरे दिन प्रवचन कर्ता देवी विष्णु प्रिया जी ने अजामिल उपाख्यान ध्रुव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, व हिरणकश्यप बध तथा नरसिंह अवतार के कथा का व्याख्यान करते हुए कहा कि श्रीमद् भागवत कथा का केंद्र है आनंद। आनंद की तल्लीनता में पाप का स्पर्श भी नहीं हो पाता। भागवत कथा एक ऐसा अमृत है कि इसका जितना भी पान किया जाए मन तृप्त नहीं होता है। उन्होंने कहा कि हिरणकश्यप नामक दैत्य ने घोर तप किया, तप से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए व कहा कि मांगों जो मांगना है। यह सुनकर हिरनयाक्ष ने अपनी आंखें खोली और ब्रह्माजी को अपने समक्ष खड़ा देखकर कहा–प्रभु मुझे केवल यही वर चाहिए कि मैं न दिन में मरूं, न रात को, न अंदर, न बाहर, न कोई हथियार काट सके, न आग जला सके, न ही मैं पानी में डूबकर मरूं, सदैव जीवित रहूं। उन्होंने उसे वरदान दिया।

हिरणकश्यप के पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु के परम भक्त थे। हिरणकश्यप भागवत विष्णु को शत्रु मानते थे। उन्होंने अपने पुत्र को मारने के लिए तलवार उठाया था कि खंभा फट गया उस खंभे में से विष्णु भगवान नरसिंह का रूप ध ारण करके जिसका मुख शेर का व धड़ मनुष्य का था। प्रगट हुए भगवान नरसिंह अत्याचारी दैत्य हिरनयाक्ष को पकड़ कर उदर चीर कर बध किया। वहीं तीसरे दिन के कथा के अनुसार कोटा राजस्थान से पधारे ज्ञानेशानंद द्वारा ध्रुव चरित्र की भव्य झांकी सजाई गई जिसमें भगवान नरसिंह के वेश में शिवांगी पांडे, लक्ष्मी देवी बनी शिवांगी पांडे, हिरणाकश्यप आयुष पांडे तथा भक्त प्रहलाद के वेश में सजी श्रेया केसरी ने वहां उपस्थित भक्तों का मन मोह लिया। तीसरे दिन की कथा का समापन मुख्य यजमान रतनलाल घर और उनकी धर्मपत्नी अनारकली देवी की व्यासपीठ और श्रीमद् भागवत कथा पुराण की पूजन आरती के साथ किया गया।इस अवसर पर मुख्य रूप से अजीत रावत, धर्मवीर तिवारी, नरेंद्र गर्ग, कृष्ण कुमार, विनोद, वीरेंद्र गोयल, सुमन केशरी, नितेश, राधेश्याम अग्रवाल, संतोष, सिट्टू, निशा, उषा अग्रवाल, नीतू सहित भारी संख्या में उपस्थित भक्तों ने कथा का श्रवण किया।

भारतीय रसोइया बेलफेयर की बैठक सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र ।माध्यमिक भारतीय रसोईया वेलफेयर

एसोसिएशन ब्लाक ईकाई दुद्धी कि बैठक रामलीला मैदान में चिंता देवी की अध्यक्षता में हुई। संचालन उषा साहु ने किया । बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में संगठन के संस्थापक ध संरक्षक तैय्यब अन्सारी उपस्थित थे। कार्यरत रसोइयों को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार सबका साथ सबका विकास के नारे के साथ सत्ता में आई ।सत्ता में आने के बाद अपने किये गये वादे को ही भुला दिया। उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में 3. 95 लाख कार्यरत रसोइया कार्यरत है , इनके साथ प्रदेश सरकार द्वारा सौतेला व्यवहार किया जा रहा है ।अन्सारी ने कहा कि केन्द्रीय श्रम मंत्री लोकनाथ शर्मा ने कहा कि अकुशल श्रमिकों का। दैनिक मानदेय 11 जुलाई सन् 2022 से 300 रुपया से बढ़ाकर 500 रुपए प्रति दिन कर दिया गया है जो महंगाई दर बढ़कर प्रति माह 16506 मानदेय का भुगतान करने के लिए कहा गया है । जब लागु कर असंगठित मजदूरों को मजदूरी देने कि बात आती है तो मौन धारण कर लिया जाता है । उच्च न्यायालय इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश का भी पालन प्रदेश सरकार द्वारा नहीं किया जा रहा है जबकि न्यायालय ने कहा था कि 50 रुपए में कार्य करना बधुया मजदुरी है, सन् 2004 से अब तक का अवषेश अन्तराल मानदेय को जोड़कर भुगतान करने के लिए कहा गया है एवं कार्यरत रसोइयों को केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मानदेय अधिनियम लागू कराने का भी आदेश दिया था, 0 9 ध 01 ध 2023 को दिन सोमवार को जिला मुख्यालय सोनभद्र स्थिति लोढी जिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को संबोधित नव वर्ष कि हार्दिक शुभकामनाए देते हुए कार्यरत रसोइयों के विभिन्न मांगों पत्रक सौंपा जाएगा। इस बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष उषा साहु ,प्रदेश सचिव ज्ञानी देवी, जिला उपाध्यक्ष गायत्री देवी पांडेय, जिला सचिव फुलवनी देवी, फुलबिना, कबुतरी देवी, चिंता देवी ,कौशिल्या देवी, सरस्वती ,पार्वती, सहित सैकड़ों रसोईया उपस्थित रही।

अवैध बालू खनन कर ले जा रहे ट्रैक्टर ट्राली को खनन ने पकड़ा

दैनिक बुद्ध का संदेश

तुलसीपुर,बलरामपुर। थाना गौरा चौराहा के अंतर्गत क्षेत्र में

कई दिनों से हो रहे अवैध खनन को लेकर क्षेत्र में शिकायत व चर्चा बनी रही जिसका संज्ञान लेते हुए जिला खनन अधिकारी ने अपने संयुक्त टीम के साथ जमुवरिया भांभर नाले पर पहुंचकर स्थानीय प्रकरण को संज्ञान में लिया जमुवरिया गांव के निकट बेनीनगर जहंदरिया मार्ग पर अवैध बालू खनन कर ले जा रहे ट्रैक्टर ट्राली को जिला खनन अधिकारी की संयुक्त टीम ने धर दबोचा वही ट्रैक्टर मालिक शिव कुमार पुत्र गुल्ले व चालक बद्री पुत्र जगदीश के विरुद्ध कार्यवाही कराते हुए ट्रैक्टर ट्राली को गौरा थाने के इंचार्ज के सुपुर्द कर दिया है जिला खनन अधिकारी अभय रंजन पांडे ने बताया कि अवैध खनन करने में सनलिप्त लोग रात में मोटरसाइकिल से चलकर रूट क्लियर करते थे और डंडे से वार करने की धमकी भी दे रहे थे जिस संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक बलरामपुर व डायल 112 की पुलिस का भी सहारा लेना पड़ा इसके बाद दबंगों की गाड़ियां कब्जे में ली गई और अवैध खनन में संलिप्त लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने के लिए लिखा पढ़ी कर दी गई है । दूसरी घटना थाना तुलसीपुर के सिरिया नाले की है जहां से बालू लदी ट्रैक्टर फर्राटा भर रहे थे वही टीम के साथ पहुंचकर अवैध बालू लदी ट्रैक्टर ट्राली को पकड़कर थाना तुलसीपुर के सुपुर्द कर दिया है जिला खनन अधिकारी अभय रंजन पांडे ने बताया कि तुलसीपुर में पकड़ी गई गाड़ी के चालक ट्रैक्टर ट्राली छोड़कर भाग गए थे कड़ी मशक्कत के बाद ट्रैक्टर ट्राली को थाना तुलसीपुर के सुपुर्द कर दिया गया है साथ ही अवैध खनन अधिनियम एक्ट के तहत कार्यवाही कराई गई है।

सोनभद्र में एम्स व केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का मांग

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। अलग पूर्वांचल राज्य की मांग कर रहे संगठन पूर्वांचल राज्य जनमोर्चा की एक बैठक निराला नगर, उत्तर प्रदेश ग्रामीण भूमि विकास बैंक के प्रांगण, रावटसगंज सोनभद्र में एक बैठक हुई।जिसमें सोनभद्र में एम्स जैसा उच्च स्तरीय चिकित्सा संस्थान व केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना की मांग हुई। बैठक में बोलते हुए संगठन के राष्ट्रीय महासचिव एड पवन कुमार सिंह कहा कि केन्द्र सरकार से सोनभद्र में भी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना कराये जाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि सोनभद्र से सटे बिहार,झारखंड ,छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश राज्य हैं यहां के आदिवासी, बनवासी एवं ग्रामीण अंचलों के पिछड़ेपन और उपरोक्त आबादी को ध्यान में रखते हुए भी एम्स की स्थापना जरूरी है और इस दिशा में सकारात्मक पहल कि आवश्यकता है। सोनभद्र से सटे जनपदों मूलतः पहाड़ी व आदिवासी क्षेत्र हैं जो कि लगभग सैकड़ों किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है ।एम्स की स्थापना हो जाने से सोनभद्र तथा सोनभद्र से सटे प्रदेशों की जनता को महंगे इलाज कराने के लिए निजी अस्पतालों

में नहीं जाना पड़ेगा। लोगों को एम्स में ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएं आसानी से सस्ते दामों में उपलब्ध होंगी।यहां के लोग मूलभूत चिकित्सा सेवाओं से कोसों दूर हैं ऐसी स्थिति में सोनभद्र में एम्स स्थापित किये जाने की ज्यादा जरूरत पूर्वांचल के सोनभद्र में है ! क्योंकि एम्स भारतवर्ष में कम खर्च पर बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाला अस्पतालों का एक समूह है जिसकी स्थापना पहले नई दिल्ली में 1956 में की गई थी इस पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर स्थापित सबसे पहले एम्स की सफलता के बाद इसे पूरे देश में स्थापित करने की शुरुआत हुई ऐसे अस्पतालों में कैंसर ,किडनी तथा ह्रदय ट्रांसप्लांट जैसी विशिष्ट सुविधाएं निजी अस्पतालों की तुलना में नाम मात्र के खर्च में उपलब्ध ा होती है यहां मिलने वाली गुणात्मक सुविधाओं की ही वजह से उसमें इलाज करवाने देश के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति से लेकर अन्य गणमान्य जन अक्सर इलाज करवाने जाते रहते हैं।राष्ट्रीय प्रवक्ता संदीप जायसवाल ने कहा कि। सोनभद्र में केंद्रीय विद्यालय स्थापित होने से आजादी के बाद शिक्षा से वंचित लोगों को शिक्षा के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा।एम्स व केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए मोर्चा द्वारा 5 सदस्यीय टीम का गठन किया गया है जिसमें जिसमें पत्रकार बृजेश कुमार पाठक, अधिवक्ता ईश्वर जायसवाल, समाजसेवी आनंद ओझा व राजकुमार सिंह व काकू सिंह बनाए गए हैं जो स्तर पर वार्ता कर एवं ज्ञापन के माध्यम से सोनभद्र में एम्स स्थापित करने हेतु मांग करेंगे। इस अवसर पर शिव प्रकाश चौबे, नवीन पांडेय,अतुल कुमार कनौजिया, राजकुमार गौतम, अतीश कुमार, राज कुमार सिंह ,दिलीप कुमार सिंह, दीप नारायण पटेल, आनंद कुमार ओझा आदि लोग उपस्थित थे।

एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

घोरावल,सोनभद्र। ई कोर्ट परियोजना विषयक एक दिवसीय

प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।रविवार को तहसील भवन के सभागार में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में अधिवक्ताओं और अधिवक्ताओं के लिपिकों को प्रशिक्षण दिया गया।प्रशिक्षण में न्यायालय सम्बन्धित सभी कार्य आन लाइन संपादित करने की जानकारी दी गई।बताते चलें कि उच्चतम न्यायालय के अध्यक्ष ई कमेटी एवं उच्च न्यायालय के अनुमोदन के उपरांत जिला न्यायाधीश द्वारा ग्राम न्यायालय घोरावल स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित किया गया।प्रशिक्षण में पीडीएफ बनाना,आन लाइन मुकदमा दाखिल करना,आन लाइन मुकदमा की फीस,ई स्टैंप और जुर्माना की राशि आदि से सम्बन्धित ऑन लाइन कार्य संपादित होने वाले विषयों का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षक राम विलास शर्मा,रविकांत रहे। इस अवसर पर अधिवक्ता राम अनुज धर,रामकिंकर पाठक,प्रफुल्ल शुक्ला,अरुण तिवारी,मदन गोपाल सिंह,आशीष सिंह,महेश यादव,राजेश दुबे आदि रहे।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

लहड़ी बलिदान दिवस धूमधाम से मना

दैनिक बुद्ध का संदेश

तुलसीपुर (बलरामपुर)जिला कारागार बलरामपुर में 9 कुंडीय हवन पूजन के साथ राजेंद्र लहड़ी बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया! यज्ञ ब्रह्मा आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश के प्रचार मंत्री अशोक आर्य ने प्लाखों दीवानों ने गर्दन कटवाई थी!सच कहता हूं तब ही आजादी आई थी!!ष् देशभक्ति गीत सुना कर वातावरण को देशभक्ति के रंग में रंग दिया! उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि काकोरी घटना के चार क्रांतिकारियों में से पं. राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, पहलवान रोशन सिंह को नैनी इलाहाबाद जेल में,अशफाक उल्ला खान को फैजाबाद जेल में तथा राजेंद्र नाथ लहड़ी को गोंडा जेल में 17 दिसंबर 1927 को फांसी दी गई थी! फांसी से पहले इन चारों क्रांतिकारियों ने अपनी अंतिम इच्छा पूर्ति करते हुए हवन किया था! गोंडा जेल में सन 1927 से लेकर आज तक प्रतिवर्ष 17 दिसंबर को हवन तथा विशाल मेला का आयोजन होता है। इस वर्ष बलरामपुर कारागार में भी 9 कुंडीय हवन,भजन तथा उपदेश का विशाल कार्यक्रम किया गया। प्रत्येक हवन कुंड के लिए अलग–अलग टोलियां बनाई गई ! गुरु वशिष्ट टोली के मुख्य यजमान सदर विधायक मा. पलटू राम जी , महर्षि बाल्मीकि टोली के मुख्य यजमान तुलसीपुर विधायक मा. कैलाश नाथ शुक्ल , गुरु सांदीपनि टोली के मुख्य यजमान आर्य वीर दल श्रावस्ती जिला संचालक श्री संतोष आर्य , लाला लाजपत राय टोली के मुख्य यजमान आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश के उपसंचालक श्री चंद्र केतु आर्य , समर्थ गुरु रामदास टोली के मुख्य यजमान आर्य वीर दल बहराइच के जिला संचालक आर्य कुमार लक्ष्मण , संत तुकाराम टोली के मुख्य यजमान श्री हरि कांत मिश्र एडवोकेट , पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी टोली के मुख्य यजमान कारागार अधीक्षक श्री कुंदन कुमार मिश्र ,पं. गणेश शंकर विद्यार्थी टोली के मुख्य यजमान श्री अरुण कुमार शुक्ल एडवोकेट , आद्य शंकराचार्य टोली के मुख्य यजमान कारागार प्रबंधक श्री बी के मिश्र जी रहे ! प्रत्येक टोली के मुख्य यजमान के साथ तीन अन्य यजमान डॉ. ए. के सिंह,श्री सेतु बंधु त्रिपाठी, श्री आनंद तिवारी,श्री सहज राम शुक्ला, श्री विजय प्रताप शुक्ला, श्री चंद्र प्रकाश पांडे, स्वामी आत्मानंद, श्री सुशील कुमार आर्य आदि श्रद्धालु उपस्थित थ। इसके साथ ही व्यवस्था के लिए आर्य वीरों की महर्षि दयानंद, सरदार भगत सिंह,वीर सावरकर, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस,लाला लाजपत राय, राजेंद्र नाथ लहड़ी,श्यामजी कृष्ण वर्मा, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानंद, सरदार उधम सिंह तथा अशफाक उल्ला खान नाम से गठित 12 टोलियों की तख्तियां लिए हुए आर्य वीर दल के 18 नौजवान तथा कारागार प्रशासन के दर्जनों नौजवान भी उपस्थिति थे !

फातमा स्कूल में बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। जनपद बलरामपुर के ग्राम बालपुर के निकट संचालित फातिमा स्कूल में छात्रों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया उक्त अवसर पर फातिमा स्कूल के छात्र छात्राओं ने बड़े ही मोहक और उत्कृष्ट तरीके से प्रदर्शन किया।उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में पधारे बलरामपुर सदर विधायक पलटू राम ने छात्र छात्राओं के साथ आयोजन कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए कहा कि उक्त विद्यालय परिसर में बड़े ही सुंदर ढंग से कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया जो वास्तव में काबिले तारीफ है।उक्त अवसर पर ही विधायक ने कक्षा 10 में उत्तीर्ण विशेष स्थान पाने वाले छात्रों को अंक पत्र के साथ बधाई दी। विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों में मुख्य रूप से प्रथम स्थान काजल यादव 96: द्वितीय स्थान सदफ खान 92: व तृतीय स्थान गुलाम मोहिउद्दीन 82: रहे।उपरोक्त छात्रों को विद्यालय निरीक्षक गोविंद राम ने भी आशीर्वाद देते हुए छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रधानाचार्य फादर अरुण मोरेश्वर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा शिक्षकों द्वारा आए हुए अतिथि का स्वागत करते हुए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया। तथा प्रधानाचार्य फादर अरुण मौर्य ने कार्यक्रम की सफलता पर विद्यालय के संपूर्ण स्टाफ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया।

क्रिसमस के दौरान घर पर बनाकर खाए जा सकते हैं ये केक, आसान है इनकी रेसिपी

क्रिसमस आने वाला है और ज्यादातर लोग इस दिन को केक काटकर उत्सव के रूप में मनाते हैं। हालांकि, अगर आप हमेशा बाहर से केक मंगवाते हैं तो इस बार क्यों न इसे घर पर बनाने की कोशिश की जाए? यकीन मानिए यह काम इतना भी मुश्किल नहीं है। आइए आज पांच तरह के क्रिसमस केक की रेसिपी जानते हैं। ये स्वादिष्ट होने के साथ बनाने में भी बहुत ही आसान होगें।

आटा केक

सबसे पहले एक कटोरे में आटा, गुड़, बेकिंग पाउडर, दालचीनी पाउडर और सोडा बाइकार्बोनेट मिलाएं। अब एक दूसरे कटोरे में योगर्ट और मक्खन मिलाकर ब्लेंड करें। फिर गीली और सूखी सामग्रियों को आपस में मिलाएं। इसके बाद मिश्रण को एक घंटे के लिए बेक करके गरमगरम परोसें। इस केक के स्वाद का मजा शाम को चाय के साथ या रात के खाने के बाद मिठाई के रूप में भी लिया जा सकता है।

मिल्क केक

सबसे पहले मिल्क पाउडर और थोड़ा ठंडा दूध मिलाकर एक तरफ रख दें। अब एक कढ़ाई में दूध, घी, चीनी, एक चुटकी फिटकरी या फिटकरी और दूध पाउडर का मिश्रण डालकर अच्छी तरह मिलाएं। लगभग 25 मिनट तक लगातार चलाते हुए इस मिश्रण को गाढ़ा होने तक पकाएं। इसके बाद इसे एक प्लेट में डालकर इस पर चांदी का वर्क लगाएं और ठंडा होने पर टुकड़ों में काटकर परोसें।

मसाला चाय केक

सबसे पहले दूध को उबालकर इसमें चायपत्ती, दालचीनी, कद्दूकस की हुई अदरक और लौंग मिलाएं। जब चाय बन जाए तो इसे छानकर अलग रख लें। अब एक कटोरे में मैदा, बेकिंग पाउडर, नमक, बेकिंग सोडा समेत इलायची पाउडर मिलाएं। एक दूसरे कटोरे में योगर्ट, मक्खन और चीनी मिलाकर फेंटे। फिर इसमें मैदे वाला मिश्रण और चाय डालकर अच्छे से मिलाएं। इसके बाद मिश्रण को 30–35 मिनट तक बेक करके परोसें।

सूजी केक

सबसे पहले चीनी, घी और दूध को मिक्सी में फेंटे। अब इसे एक कटोरे में वनिला एसेंस और योगर्ट के साथ डालकर फेंटे। फिर इसमें सूजी और बेकिंग पाउडर मिलाएं। इस मिश्रण को केक टिन में डालें और टिन को प्रेशर कुकर में नमक के साथ रखकर बेस पर वायर रैक रखें। बिना सीटी के 45–50 मिनट तक इस केक को पकाने के बाद खाएं।

खजूर, अखरोट और काजू का केकः सबसे पहले तीन घंटे पानी में भीगे खजूर और अखरोट को एक साथ ब्लेंड करें। फिर बटर पेपर लगे केक टिन में मिश्रण को डालकर कुछ देर फ्रिज में रखें। इसके बाद काजू, मेपल सिरप, नारियल तेल, नींबू का रस और लेमन जेस्ट को एक साथ ब्लेंड करें। अब इस मिश्रण को खजूर और अखरोट के मिश्रण पर फैलाएं और तीन घंटे के लिए फ्रिज में रख दें। अंत में इस केक पर कुछ बेरीज लगाकर इसे परोसें।

फुरसत से तू नाच बेबी के लिए डांस स्टेप्स सीखने में करनी पड़ी मेहनतः चाहत खन्ना

बड़े अच्छे लगते हैंच की अभिनेत्री चाहत खन्ना का कहना है कि उन्हें अपनी फिल्म श्धूप छांक्य के गाने श्फुरसत से तू नाच बेबीच के लिए डांस स्टेप्स सीखने में काफी मेहनत करनी पड़ी है। वह साझा करती हैं, जब मैं श्धूप छांक्य की शूटिंग कर रही थी,

तो यह मेरा पहला डांस नंबर था। मैं स्कूल के समय से ज्यादा डांस नहीं करती थी और इसलिए यह मेरे लिए एक मुश्किल काम था। मेरे दोस्त मुझे चिढ़ाते थे और मुझे लगता था जैसे मुझे आगे बढने की जरूरत थी, इसलिए लगभग एक साल तक मैंने डांस सीखा। वह आगे कहती हैं, और उस अवधि के अंत में, लगभग एक चमत्कार या इनाम की तरह, मुझे श्फुर्सत से तू नाच बेबीच्य का प्रस्ताव मिला। चाहत को श्कुमकुम्य, श्काज्जल्य, श्कुबूल हैंच और कई अन्य फिल्मों के लिए जानी जाती है। वह कहती हैं कि उन्होंने अपने नृत्य कौशल को पूरा करने में घंटों बिताए और बीमार भी पड़ गईं। हमने इसके लिए कठिन प्रशिक्षण और शूटिंग के घंटे बिताए हैं। वास्तव में 3 दिनों के लिए, हमने हर दिन 12 घंटे बिना रुके प्रशिक्षण लिया और मैं अंत में बीमार पड़ गयी। इसलिए हमें शूटिंग स्थगित करनी पड़ी और जब हम इसमें वापस आए, तो हम इसे सीधे 8 घंटे में शूट किया। लेकिन कुल मिलाकर यह एक खूबसूरत अनुभव था और मेरे दिल में हमेशा एक खास जगह रहेगी।

रितेश देशमुख की वेड से सलमान खान ने साझा की अपनी पहली झलक

रितेश देशमुख की आने वाली मराठी फिल्म वेड चर्चा में है। पहली बार होगा जब रितेश किसी मराठी फिल्म में अपनी पत्नी जेनेलिया डिसूजा के ऑपोजिट नजर आएंगे। शनिवार को रितेश के जन्मदिन के मौके पर जेनेलिया ने फिल्म के सेट का एक वीडियो शेयर किया है। हालांकि, दर्शकों को उत्साहित करने वाली खबर ये है कि फिल्म में सलमान खान का कैमियो भी होगा। शनिवार को फिल्म से सलमान ने अपनी पहली झलक शेयर की है।

वेड में सलमान एक डांस नंबर करते नजर आएंगे। शनिवार को इस गाने का टीजर शेयर करते हुए सलमान ने लिखा, भाई का बर्थडे है, गिफ्ट तो बनता है। टीजर में रितेश देशमुख और सलमान दोनों ही अपने टपोरी स्टाइल में नजर आ रहे हैं। सलमान का अंदाज देखकर दर्शकों को वॉन्टेड के राधे की याद आ गई। हालांकि, टीजर में वेड लावलय गाने की रिलीज डेट की जानकारी नहीं दी गई है।

वेड 2019 की तेलुगु फिल्म मजिली का रीमेक है। यह 30 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। फिल्म का निर्देशन भी रितेश खुद कर रहे हैं। फिल्म में रितेश और जेनेलिया डिसूजा की जोड़ी रोमांस करती दिखेगी। इस फिल्म में रितेश एक बेरोजगार युवा के किरदार में हैं, जिसकी पत्नी अकेले घर चलाती है। अब सलमान की एंट्री ने वेड को लेकर दर्शकों में इसके लिए उत्सुकता बढ़ा दी है।

रितेश का जन्म 17 दिसंबर, 1978 को महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और दिवंगत नेता विलासराव देशमुख के घर हुआ था, लेकिन राजनीति में करियर बनाने की बजाए उन्होंने फिल्मों की दुनिया में कदम रखा। तुझे मेरी कसम, रितेश और जेनेलिया के साथ में पहली फिल्म थी। दोनों की डेटिंग ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं। फिर उन्हें साल 2012 में आई फिल्म तेरे नाल लव हो गया और 2014 में आई लाई भारी फिल्म में साथ देखा गया।

रितेश देशमुख के जन्मदिन पर जेनिलिया डिसूजा ने उनके लिए इंस्टाग्राम पर एक प्यार भरा नोट लिखा है। उन्होंने रितेश की एक वीडियो शेयर कर लिखा, मैं आपसे बेहद प्यार करती हूं। आपको प्यार न करना नामुमकिन है। अगर मेरे पास सांस लेने और आपको प्यार करने में से एक को चुनने का विकल्प हो तो मैं अंतिम सांस आपको यह बताते हुए लूंगी कि मैं आपसे प्यार करती हूं। मेरे होने के लिए शुक्रिया।

बॉबी देओल ने कुणाल कोहली की श्लोक– द देसी शेरलॉक की शूटिंग की पूरी

अभिनेता बॉबी देओल के लिए यह साल काफी अच्छा रहा। अब उन्होंने अपने एक प्रोजेक्ट को निपटा लिया है। उन्होंने कुणाल कोहली की फिल्म श्लोक– द देसी शेरलॉक की शूटिंग

की पूरी कर ली है। अभिनेता ने सेट से तस्वीरें शेयर करते हुए इस संबंध में जानकारी दी है। इस फिल्म का निर्देशन कुणाल ही कर रहे हैं। यह एक स्पाई थ्रिलर फिल्म है, जिसमें बॉबी का अलग अंदाज देखने को मिलेगा।

बॉबी ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट के कैप्शन में लिखा, फिल्म श्लोक– द देसी शेरलॉक की शूटिंग पूरी हुई। टीम के साथ काम करने का अनुभव शानदार रहा। बेहतरीन लोगों के साथ मैंने काम किया। उन्होंने सितंबर में फिल्म की शूटिंग शुरू की थी। इस फिल्म से अनन्या बिड़ला बॉलीवुड में अपना डेब्यू करने वाली हैं। वह आदित्य बिड़ला ग्रुप के चौयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी हैं। फिलहाल एक गायिका के रूप में उनकी पहचान है।

रेजिस्टेंस ट्रेनिंगः जानिए इस वर्कआउट के फायदे और अन्य महत्वपूर्ण बातें

रेजिस्टेंस ट्रेनिंग सबसे लोकप्रिय वर्कआउट में से एक है। इसके लिए आप डंबल्स और रजिस्टेंस बैंड का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह वर्कआउट मांसपेशियों को मजबूती देने और सहनशक्ति में सुधार करने में काफी मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह मेटाबॉलिज्म को तेज करके कैलोरी को बर्न करने में मदद करता है। इस वजह से इसे अपने फिटनेस रूटीन का हिस्सा बनाना लाभदायक हो सकता है। आइए इस वर्कआउट से जुड़ी अन्य महत्वपूर्ण बातें जानते हैं।

आसान है रजिस्टेंस ट्रेनिंग वर्कआउट

रजिस्टेंस ट्रेनिंग काफी हद तक इस सिद्धांत पर आधारित होती है कि रजिस्टेंस या बल पर काबू पाने के लिए शरीर की मांसपेशियां एक साथ काम करें। जब इसे नियमित अंतराल पर किया जाता है तो मांसपेशियां को मजबूती मिलने लगती है। इसके लिए आप वेट मशीन, मेडिसिन बॉल्स, रजिस्टेंस बैंड या फ्री वेट डंबल आदि उपकरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

रजिस्टेंस ट्रेनिंग से मिलने वाले लाभ

रजिस्टेंस ट्रेनिंग का रोजाना अभ्यास करने से कई तरह के स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं। यह वर्कआउट वजन घटाने, मेटाबॉलिज्म के स्तर को सुधारने और ब्लड प्रेशर को संतुलित रखने में काफी मदद कर सकता है। इसके अलावा, यह शारीरिक संतुलन को ठीक करने समेत हड्डियों का घनत्व भी बढ़ाता है और यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी उपयोगी है।

रजिस्टेंस बैंड चुनते समय बरतें सावधानी

अगर आप इस वर्कआउट के लिए रजिस्टेंस बैंड को चुनते हैं तो इसके लिए अधिक टाइट रेजिस्टेंस बैंड का इस्तेमाल करने से बचें। इससे एक्सरसाइज करने में काफी परेशानी हो सकती है। दरअसल, ऐसे बैंड के इस्तेमाल से शरीर पर अधिक दबाव पड़ता है और इस कारण कई तरह की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। एक्सरसाइज के लिए थोड़े ढीले रेजिस्टेंस बैंड बेहतरीन होते हैं।

एक शेड्यूल बनाएं

वर्कआउट को फिटनेस रूटीन में शामिल करने के लिए एक शेड्यूल बनाएं। अगर आप शुरुआती दौर में हैं तो हफ्ते में दो दिन इस वर्कआउट का अभ्यास करना सुनिश्चित करें, जबकि नियमित वर्कआउट करने वाले लोग हफ्ते में चार–पांच दिन कर सकते हैं। इस वर्कआउट में स्क्वैट्स, पुश–अप्स और प्लैंक जैसी एक्सरसाइज की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, इस वर्कआउट के दौरान अपनी क्षमतानुसार वजन उठाएं और हमेशा हाइड्रेट रहें।